राजस्थान में जैव विविधता एवं वन्य जीव संरक्षण

- ✓ पारिस्थितिकी तंत्र
- ✓ राजस्थान में पारिस्थितिकी समस्याएँ
- ✓ वन्यजीव / पारिस्थितिकी संरक्षण

पारिस्थितिकी तंत्र (100 words)

➢ राजस्थान राज्य को 4 पारिस्थितिकी तंत्रों में बाँटा गया है–

1. मरु पारिस्थितिकी तंत्र
2. अरावली पारिस्थितिकी तंत्र
3. पूर्वी मैदान पारिस्थितिकी तंत्र
4. हाड़ौती पारिस्थितिकी तंत्र

1. मरु पारिस्थितिकी तंत्र–

➢ उत्तर- पश्चिम राजस्थान में विस्तृत।

➢ वनस्पति- इस पारिस्थितिकी तंत्र में जीरोफाइट्स या मरुद्भिद / कंटीली वनस्पति पाई जाती है।
जैसे- कैक्टस, कंटीली झाड़ियाँ, डंडा थोर

➢ वन्यजीव→ मरु लोमड़ी, गोडावण, चिंकारा, कुरजा, छोटा किलकिला काला हिरण।

➢ विशेषता→ इस पारिस्थितिकी तंत्र में जैव विविधता कम पाई जाती है क्योंकि यहाँ वर्षा एवं वनस्पति सघनता कम होती है।

२. अरावली पारिस्थितिकी तंत्र-

- यह राजस्थान के दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर विस्तृत है।
- वनस्पति → उपोष्ण सदाबहार, उष्ण धोक, उष्ण शुष्क मानसूनी/ पतझड़
- वन्यजीव → कब्र बिज्जु (उदयपुर), जंगली मुर्गे, भेड़िये (राजसमंद), खड़मोर (अजमेर), चीतल (जयपुर), सांभर (अलवर), खरगोश (दौसा)

> NOTE- इस पारिस्थितिकी तंत्र में जैव विविधता सर्वाधिक पाई जाती है। क्योंकि यहाँ वनस्पति सघनता अधिक होती है।

3. पूर्वी मैदान पारिस्थितिकी तंत्र-

- यह पारिस्थितिकी अरावली के पूर्व में स्थित है।
- इस पारिस्थितिकी तंत्र में उष्ण शुष्क मानसूनी वनस्पति (पतझड़ वन) पाई जाती है, जैसे- साल, सागवान, शीशम, पलाश एवं खैर।
- वन्य जीव- इस पारिस्थितिकी तंत्र में पक्षी जैव विविधता अधिक पाई जाती है। जैसे-
  - जलपीपी - बांसवाड़ा
  - जांघिल - डूंगरपुर
  - सारस - भरतपुर
  - मोर - भीलवाड़ा
  - हंस - टोंक
  - इंडियन स्कीमर (पंछीडा)- धौलपुर

4. हाड़ौती पारिस्थितिकी तंत्र-

- यह पा॰ तंत्र राजस्थान के द॰ पू. क्षेत्र में स्थित है।
- इस पारिस्थितिकी तंत्र में उष्ण सागवान वन पाए जाते है।
- वनस्पति- सागवान, गूलर, महुआ, तेन्दु।

Springboard Academy

- वन्यजीव– इसमें जलीय जैव विविधता अधिक पाई जाती है।
  जैसे घड़ियाल (करौली), मगरमच्छ (बारां), गांगेय सूंस, उद्बिलाव (कोटा), सुर्खाब (बूंदी)

विशेषता- इस पारिस्थितिकी तंत्र में वर्षा सर्वाधिक होती है। इस कारण सतही जल की उपलब्धता अधिक होती है।

राजस्थान में पारिस्थितिकी की समस्याएँ/चुनौतियाँ

चुनौतियाँ- (50 words)

- राजस्थान में क्षेत्रफल की तुलना मे वन्य जीव कम पाए जाते है।
- जिसका कारण–

मानवीय कारण	जलवायु/ पर्यावरणीय कारण
1. बढ़ती हुई जनसंख्या एवं पशु सम्पदा।	1. राजस्थान में अल्प वर्षा का होना।
2. वनों एवं वृक्षों की कटाई।	2. सतही एवं भूमिगत जल की कम उपलब्धता
3. बढ़ता हुआ नगरीकरण एवं औद्योगिकरण।	3. प्राकृतिक वनस्पति की कमी।
4. मानव व वन्यजीवों के मध्य बढ़ते हुए आपसी संघर्ष।	4. बढ़ता हुआ मरुस्थलीकरण।
5. अरावली क्षेत्र में बढ़ता हुआ खनन।	5. वन्यजीवों के मध्य बढ़ते हुए आपसी संघर्ष।

Springboard ACADEMY

वन्यजीव / पारिस्थितिकी संरक्षण

असम के बाद, राजस्थान वन्य जीवों में दूसरा स्थान रखता है। आजादी से राजस्थान को "शिकारियों के स्वर्ग" के रूप में जाना जाता था। आजादी के बाद, पेड़ों की अनियंत्रित कटाई और अवैध शिकार के कारण, केन्द्र और राज्य सरकार दोनों वन और वन्यजीव संरक्षण के लिए संयुक्त रूप से प्रयासरत है।

वन्य जीवों को दो तरीकों से संरक्षित किया जा सकता है-

वन्यजीव संरक्षण

स्वः स्थाने संरक्षण (In-Situ)

- जीवों को उनके प्राकृतिक आवास में संरक्षित करना।

उदा. • राष्ट्रीय उद्यान
• वन्यजीव अभयारण्य
• बाघ संरक्षण परियोजना
• रामसर साइट
• कन्जर्वेशन रिजर्व
• आखेट निषेध क्षेत्र एवं जैव मण्डल

बाह्य स्थाने संरक्षण (Ex-Situ)

जीवों को उनके प्राकृतिक आवास के बाहर संरक्षित करना।

उदा.- • जंतुआलय
• मृग उद्यान
• पशु जीन बैंक एवं एक्वेरियम

I. स्वःस्थाने संरक्षण-

- राष्ट्रीय उद्यान- राजस्थान में तीन राष्ट्रीय उद्यान है, जो निम्न लिखित है- (a) रणथम्भौर
(b) केवलादेव
(c) मुकुंदरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान

Springboard ACADEMY

(a) रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान- (1980)

- सवाई माधोपुर (२८२.03 Km^2)
- राजस्थान का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान (बाघों का घर)
- राजस्थान की प्रथम बाघ परियोजना (प्रमुख बाघिन - मछली / T-16)
- त्रिनेत्र गणेश मन्दिर, जोगी महल एवं कुक्कुर घाटी (डॉग वैली) स्थित।
- धोक वृक्ष की अधिकता
- रणथम्भौर में स्थित तालाब- काला तालाब, जंगली तालाब, सुख तालाब

(b) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान / घाना पक्षी विहार (1981)-

- भरतपुर, क्षेत्र॰→ (२8.73 Km^2)
- यूनेस्को धरोहर सूची में शामिल राज्य की एकमात्र प्राकृतिक धरोहर (1985)
- शीत ऋतु में साइबेरियन सारस यहाँ आते है।
- इसे पक्षियों का स्वर्ग भी कहते है।
- 1981 में रामसर सूची में शामिल।
- डॉ. सलीम अली की कर्मस्थली
- अजान बाँध इसी अभयारण्य में स्थित है।
- इस राष्ट्रीय उद्यान में 'ऐंचा' घास अधिक पाई जाती है।

(c). मुकुंदरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान- (२012) (कोटा, चित्तौड़गढ़)

- राजस्थान का नवीनतम राष्ट्रीय उद्यान।
- राजस्थान का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान (२97.62 वर्ग कि.मी)
- गागरोनी तोते एवं बाघों के लिए प्रसिद्ध।

Springboard ACADEMY

- राज्य की तीसरी बाघ परियोजना
- सागवान वनस्पति अधिक पाई जाती है।

NOTE:- मुकुन्दरा
→ राष्ट्रीय उद्यान - (कोटा - चित्तौड़)
→ हिल्स - (कोटा - झालावाड़)
→ बाघ परियोजना - (कोटा, बूँदी, झालावाड़, चित्तौड़)
→ दर्रा अभयारण्य - (कोटा, झालावाड़)

अभयारण्य

राज्य अभयारण्य - (२६)

सबसे बड़ा

1. राष्ट्रीय मरुउद्यान (3162 Km²)
2. कैलादेवी अभयारण्य (677 Km²)
3. कुम्भलगढ़ अभयारण्य (611 Km²)

सबसे छोटा

1. सरिस्का - अ (3 Km²)
2. सज्जनगढ़ अभयारण्य (5 Km²)
3. तालछापर अभयारण्य (7 Km²)

प्रमुख अभयारण्य

नाम	क्षेत्र	वर्ष	विशेषताएँ
रामसागर	धौलपुर	1955	
वन विहार	धौलपुर	1955	
केसरबाग	धौलपुर	1955	
सरिस्का - अ	अलवर	2012	राज. का सबसे छोटा अभयारण्य
सरिस्का	अलवर	1955	• राज. की दूसरी बाघ परियोजना (1978) • मोर व हरे कबूतर के लिए प्रसिद्ध पांडुपोल, भर्तृहरि मंदिर, नीलकण्ठ महादेव एवं नारायणी माता मन्दिर।
सवाई माधोपुर	सवाई माधोपुर	1955	
जयसंमद	सलूम्बर	1955	"जलचरों की बस्ती" क्योंकि जलीय जैव विविधता अधिक।

Springboard Academy

दर्रा	कोटा, झालावाड़	1955	• गागरोनी तोते
तालछापर	चुरू	1962	• काले हिरण, कुरजा पक्षी एवं गुरु द्रोणाचार्य आश्रम स्थित । • मोचिया घास
कुंभलगढ़	उदयपुर, पाली व राजसंमद	1971	• भेड़ियों एवं रणकपुर जैन मंदिर के लिए प्रसिद्ध ।
जवाहर सागर	बूँदी, कोटा, चित्तौड़गढ़	1975	• घड़ियालों के लिए प्रसिद्ध । • गरड़िया महादेव मन्दिर, गेपरनाथ मन्दिर
राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल	धौलपुर, करौली बूँदी, कोटा, स. माधोपुर	1979	• घड़ियाल, मगरमच्छ, डॉल्फिन के लिए प्रसिद्ध ।
सीतामाता वन्य जीव अभयारण्य	प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ व सलूम्बर	1979	• यहाँ अधिकतम जैव विविधता पाई जाती है। • सागवान वृक्ष अधिक पाए जाते हैं। • उड़न गिलहरी, पैंगोलिन, चीतल और चौसिंगा के लिए प्रसिद्ध
नाहरगढ़	जयपुर व जयपुर ग्रामीण	1980	• जैविक उद्यान के रूप में विकसित • जयपुर जन्तुआलय (रामनिवास बाग से) स्थानांतरित • इसे एक्जोटिक पार्क के रूप में स्थापित किया जायेगा । • लॉयन सफारी की शुरुआत की।
राष्ट्रीय मरु उद्यान	जैसलमेर, बाड़मेर (3162 Km²)	1980	• राज्य का सबसे बड़ा अभयारण्य, सेवण घास सर्वाधिक, गोडावण एवं चिंकारा अधिक • इसमें फॉसिल पार्क स्थित है। • गोडावण प्रजनन केन्द्र
रामगढ़ विषधारी	बूँदी	1982	• इसमें अजगर पाए जाते हैं। • इसमें मेज नदी बहती है। • कनक सागर झील (दुगारी बाँध) • राज्य की 4th बाघ परियोजना

Springboard Academy

जमवारामगढ़	जयपुर ग्रामीण	1982	• धोक वन पाए जाते है • जमवाय माता का मन्दिर
टॉडगढ़ अरावली	ब्यावर, पाली, राजसमंद	1983	
फुलवारी की नाल	उदयपुर कोटड़ा	1983	• सोम, मानसी व वाकल नदियाँ बहती है।
भैंसरोड़गढ़	चित्तौड़गढ़	1983	• घड़ियालों के लिए प्रसिद्ध • चम्बल + ब्राह्मणी नदी के किनारे स्थित
शेरगढ़	बारां	1983	• ये साँपों, शेरगढ़ दुर्ग, परवन नदी के लिए प्रसिद्ध। "सांपों की शरणस्थली"
कैलादेवी	करौली सवाई माधोपुर	1983	सर्वाधिक धोक वन
सवाई मानसिंह	सवाई माधोपुर	1984	
बंध बारेठा	भरतपुर	1985	"पक्षियों का घरौंदा"; कुकुन्द नदी व बंध बारेठा झील
सज्जनगढ़	उदयपुर	1987	• "प्रथम बॉयोलॉजिकल पार्क" • राजस्थान का दूसरा छोटा अभयारण्य
बस्सी	चित्तौड़गढ़	1988	जलेश्वर महादेव
माउंट आबू	सिरोही	2008	• डिक्लिप्टेरा आबू ऐंसिस' वनस्पति पाई जाती है। (अम्बरतरी) • जंगली मुर्गी

बाघ परियोजनाएँ

राजस्थान में 5 बाघ परियोजनाएँ

- रणथम्भौर
- सरिस्का
- मुकुंदरा हिल्स
- रामगढ़ विषधारी
- धौलपुर-करौली

Springboard Academy

1. रणथम्भौर	1974	स. माधोपुर करौली बूंदी टोंक	1530.23 Km²	रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान, स. माधोपुर अभयारण्य, कैलादेवी, राष्ट्रीय चम्बल अभ.
2. सरिस्का	1978	अलवर, जयपुर, जयपुर ग्रामीण	1213.34 Km²	सरिस्का और जमवारामगढ़ अभयारण्य
3. मुकुंदरा हिल्स	2013	कोटा, बूंदी, झालावाड़, चित्तौड़	1135.78 Km²	मुकुंदरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान, दरा अभयारण्य, चम्बल अभयारण्य, जवाहरसागर अभयारण्य
4. रामगढ़ विषधारी	2021	बूंदी, कोटा झालावाड़	1496.49 Km²	रामगढ़ विषधारी
5. धौलपुर-करौली	2023	धौलपुर-करौली	599.64 Km²	

रामसर साइट

↳ वर्तमान में राज्य में दो रामसर साइट है।

1. केवलादेव 1981 → साइबेरियन सारस
2. सांभर 1990 → कुरजा एवं राजहंस

कंजर्वेशन रिजर्व

↳ राज्य में कुल 37 कंजर्वेशन रिजर्व है,-

1. जोड़बीड़ गढ़वाला → बीकानेर

Springboard Academy

2. जवाई बाँध लैपर्ड-I → पाली
3. जवाई बाँध लैपर्ड-II → पाली
4. बीड़ → झुंझुनूं
5. बांसियाल-खेतड़ी → नीम का थाना
6. बांसियाल-खेतड़ी बागार → नीम का थाना
7. मनसा माता → झुंझुनूं, नीम का थाना
8. बीसलपुर → केकड़ी
9. सुंधा माता → जालौर-सिरोही
10. शाकम्भरी → सीकर, नीम का थाना
11. गोगेलाव → नागौर
12. रोटू → नागौर
13. गुढ़ा विश्नोईयां → जोधपुर
14. उम्मेदगंज पक्षी विहार → कोटा
15. शाहबाद कन्जर्वेशन → बारां
16. बीड़ घास फुलिया खुर्द → शाहपुरा
17. बागदरा मगरमच्छ → उदयपुर
18. रणखार → सांचौर
19. शाहबाद-तलहटी → बारां
20. वाड़ाखेड़ा → सिरोही
21. झालाना-आमागढ़ → जयपुर
22. रामगढ़-कुंजी-सुनवास → बारां
23. अरवड़ गाँव (खड़मोर) → अजमेर
24. खींचन (कुरजां) → फलौदी
25. हमीरगढ़ → भीलवाड़ा
26. बांझ आम्ली → बारां
27. सोरसन-I → बारां
28. सोरसन-II → बारां
29. सोरसन-III → बारां
30. महसीर → उदयपुर

Springboard Academy

३१. बीड़ फतेहपुर → सीकर
३२. बीड़ मुहाना -A → जयपुर
३३. बीड़ मुहाना -B → जयपुर (सबसे छोटा)
३४ अमरख महादेव लैपर्ड → उदयपुर
३५. बालेश्वर → सीकर एवं नीम का थाना (सबसे बड़ा)
३६. गंगा भैरव घाटी → अजमेर
३७ आसोप कंजर्वेशन रिजर्व → भीलवाड़ा

आखेट निषेध क्षेत्र (राज्य में कुल ३३)

- सबसे बड़ा - कोटसर सम्वतसर - पुरु - बीकानेर
- सबसे छोटा - कनक सागर (बूँदी)
- अन्य
  - जोधपुर – डोली, गुढा बिश्नोई
  - बीकानेर – जोड़बीड़, मुकाम, बज्जू, देशनोक
  - अजमेर – सोखलिया, तिलोरा
  - जयपुर – सन्थाल, महला

II. बाह्य स्थाने संरक्षण :-

A. जन्तु आलय – राजस्थान में ५ जन्तु आलय है।

(i) जयपुर जन्तुआलय –
राज्य का प्रथम जन्तुआलय।

निर्माण - रामसिंह -II, (1876) राम निवास बाग
वर्तमान में नाहरगढ़ अभयारण्य में स्थानांतरित।
यहाँ घड़ियाल प्रजनन केन्द्र स्थित है।

(ii) उदयपुर जन्तुआलय - 1878, गुलाबबाग (उदयपुर) में स्थापित।
→ राज्य का दूसरा जन्तुआलय
वर्तमान- सज्जनगढ़ जैविक उद्यान में स्थानांतरित।

(iii) बीकानेर जन्तुआलय - स्थापना - १९२२

Springboard Academy

(iv) जोधपुर जन्तुआलय-

स्थापना- 1936

पक्षीशाला एवं गोडावन प्रजनन केन्द्र स्थित है।

(v) कोटा जन्तुआलय- इसकी स्थापना- 1954

(B) मृग उद्यान- राजस्थान में कुल 7 मृग उद्यान है।

1. अशोक → जयपुर		5. पुष्कर → अजमेर	
२. संजय → जयपुर ग्रामीण		6. सज्जनगढ़ → उदयपुर	
3. अमृता देवी → जोधपुर		7. दुर्ग → चित्तौड़गढ़	
4. माचिया सफारी → जोधपुर			

वन्यजीव शुभंकर- शुरुआत- मार्च २०16, वन विभाग द्वारा

1. अजमेर	→ खड़मोर पक्षी	18. जालोर	→ भालू
२. अलवर	→ सांभर	19. जोधपुर	→ कुरजा पक्षी
3. बारां	→ मगरमच्छ	२0. कोटा	→ उदबिलाव
4. बीकानेर	→ बटबड़/रेत का तीतर	२1. टोंक	→ हंस
5. बूंदी	→ सुर्खाब	२२. प्रतापगढ़	→ उड़न गिलहरी
6. चुरू	→ काला हिरण	२3. स. माधोपुर	→ बाघ
7. दौसा	→ खरगोश	२4. सीकर	→ शाहिन (बाज)
8. डूँगरपुर	→ जांघिल	२5. सिरोही	→ जंगली मुर्गी
9. भीलवाड़ा	→ मोर	२6. झालावाड़	→ गागरोनी तोता
10. बाँसवाड़ा	→ जलपीपी	२7. करौली	→ घड़ियाल
11. बाड़मेर	→ लोमड़ी	२8. नागौर	→ राजहंस
1२. भरतपुर	→ साइबेरियन सारस	२9. पाली	→ तेंदुआ
13. चित्तौड़गढ़	→ चौसिंगा	30. राजसमंद	→ भेड़िया
14. झुंझुनूं	→ काला तीतर	31. श्रीगंगानगर	→ चिंकारा
15. धौलपुर	→ पंचीरा (इंडियन स्कीमर)	3२. उदयपुर	→ कब्र बिज्जू
16. हनुमानगढ़	→ छोटा किलकिला	33. जयपुर	→ चीतल
17. जैसलमेर	→ गोडावण		

Springboard ACADEMY

मुख्य वन्यजीव—

१. चिंकारा—

- 1981 में राज्य पशु घोषित।
- वैज्ञानिक नाम → गजेला-गजेला
- नाहरगढ़ अभयारण्य एवं राष्ट्रीय मरुस्थल अभयारण्य चिंकारा के लिए प्रसिद्ध।

२. गोडावण—

- 1981 में राज्य पक्षी घोषित।
- वैज्ञानिक नाम- Ardeotis Nigriceps
- इसे ग्रेट 'इंडियन बस्टर्ड' एवं 'सोन चिड़िया' भी कहा जाता है।
- यह सर्वाधिक जैसलमेर (मरु उद्यान) अजमेर (सांखलिया) एवं बारां (सोरसन) में पाया जाता है।
- गोडावन प्रजनन केन्द्र, जोधपुर, जैसलमेर (मरु उद्यान) एवं बारां (सोरसन) में स्थित है।
- गोडावन का हैचिंग सेंटर (कृत्रिम प्रजनन केन्द्र) रामदेवरा (जैसलमेर) में स्थापित किया गया।

Springboard ACADEMY

आर्थिक भूगोल

कृषि

- ✓ परिचय
- ✓ कृषि जलवायु प्रदेश
- ✓ कृषि के प्रकार
- ✓ कृषि का वर्गीकरण
- ✓ कृषि फसलों के अनुकूल भौगोलिक दशाएँ
- ✓ कृषि विकास के प्रयास

✓ परिचय-

कृषि प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा है।
भारत / राजस्थान की कृषि मुख्यतः मानसून पर आधारित है इस कारण कृषि को 'मानसून का जुआ' कहते है।

↳ पूर्वी मैदान को 'कृषि का हृदय स्थल' कहा जाता है क्योंकि यहाँ कृषि उत्पादकता अधिक होती है।

✓ कृषि जलवायु प्रदेश-

- भारत → 15
- राजस्थान → 10

↳ कृषि जलवायु प्रदेशों का आधार-
- फसल चक्रण
- मिट्टी
- जल उपलब्धता
- वर्षा

Springboard ACADEMY

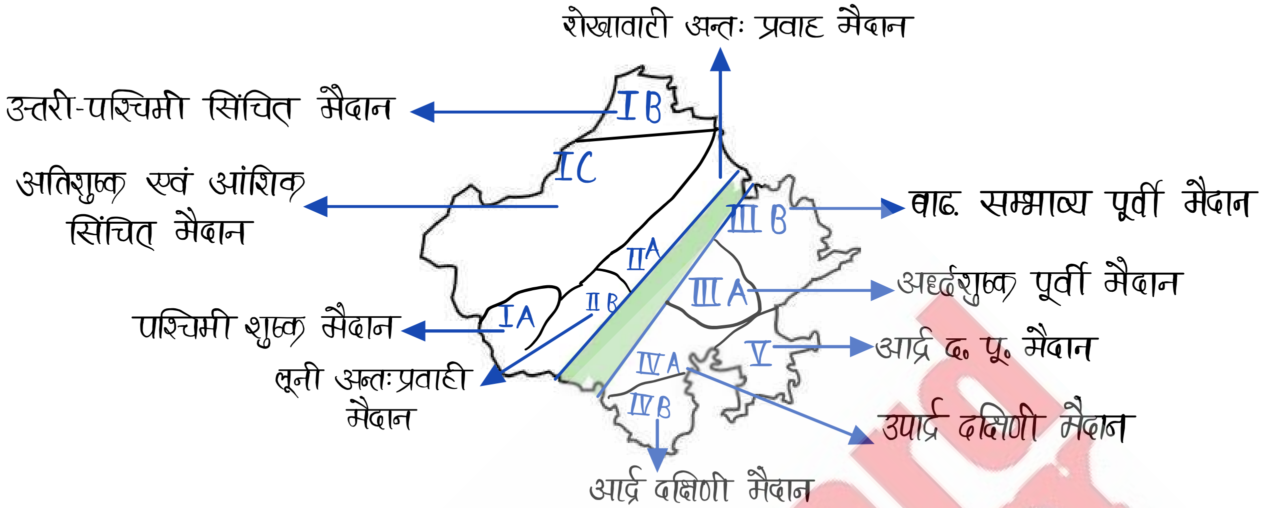

1. IA ➜ पश्चिमी शुष्क मैदान

- विस्तार- जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, बाड़मेर एवं बालोतरा
- वर्षा - २0-35 cm
- फसल प्रारूप – रबी = गेहूँ, चना, सरसों, ईसबगोल, मोठ एवं जीरा
  – खरीफ = बाजरा, ज्वार

२. IB ➜ उत्तरी-पश्चिमी सिंचित मैदान

- विस्तार - श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ एवं अनूपगढ़
- वर्षा - 10-30 सेमी.
- फसल प्रारूप ➜ रबी = गेहूँ, सरसों, चना
  ➜ खरीफ = कपास, गन्ना, चावल

3. IC ➜ अतिशुष्क एवं आंशिक सिंचित मैदान-

- विस्तार - जैसलमेर, बीकानेर, चुरू आंशिक (रतनगढ़, सरदारशहर, बीदासर एवं सुजानगढ़ तहसील)
- वर्षा - 10-30 सेमी.
- फसल प्रारूप ➜ रबी = गेहूँ, चना, सरसों
  ➜ खरीफ = बाजरा, ज्वार, मूंगफली

Springboard Academy

4. II A (शेखावाटी अन्तः प्रवाह मैदान)–

- विस्तार – सीकर, झुंझुनूं, नागौर, आंशिक चुरू (रतनगढ़, सरदारशहर, बीदासर एवं सुजानगढ़ तहसील को छोड़कर) झुन्झुनू, नागौर, डीडवाना एवं कुचामन।
- वर्षा – 30-50 cm
- फसल प्रारूप → रबी = गेहूँ, सरसों, चना
  → खरीफ = बाजरा, ग्वार, दलहनी फसलें (मूंग, मोठ, चंवला)

5. II B (लूनी अन्तःप्रवाही मैदान)–

- विस्तार – पाली, जालौर-सांचौर, सिरोही (पिण्डवाड़ा, आबूरोड़ तहसील को छोड़कर), पाली, ब्यावर आंशिक (जैतारण एवं रायपुर तहसील)
- वर्षा – 30-50 सेमी
- फसल प्रारूप → रबी = गेहूँ, सरसों, चना, ईसबगोल, जीरा, अरण्डी
  → खरीफ = बाजरा, ग्वार, तिल, अरण्डी

6. III A (अर्द्धशुष्क पूर्वी मैदान)–

- विस्तार – अजमेर, ब्यावर आंशिक (जैतारण एवं रायपुर तहसील को छोड़कर) जयपुर, जयपुर ग्रामीण, दौसा, टोंक, दूदू, केकड़ी, खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़
- वर्षा – 50-70 cm
- फसल प्रारूप → रबी = गेहूँ, सरसों, चना, जौ
  → खरीफ = बाजरा, ज्वार, ग्वार

7. III B → बाढ़ सम्भाव्य पूर्वी मैदान-

- विस्तार – अलवर, डीग, भरतपुर, करौली, धौलपुर, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी
- वर्षा – 50-70 सेमी.
- फसल प्रारूप → रबी = गेहूँ, सरसों
  → खरीफ = बाजरा, ग्वार

Springboard Academy

8. IV A ➜ उपार्द्र दक्षिणी मैदान-

➜ विस्तार – उदयपुर, चित्तौड़गढ़ (बड़ी सादड़ी तहसील छोड़कर) राजसमन्द, भीलवाड़ा, शाहपुरा, सिरोही आंशिक (पिण्डवाड़ा एवं आबूरोड़ तहसील)

➜ वर्षा – 50-90 सेमी.

➜ फसल प्रारूप ➜ रबी = गेहूँ, चना, अफीम
➜ खरीफ = , गन्ना, ज्वार मक्का

9. IV B ➜ आर्द्र दक्षिणी मैदान -

➜ विस्तार – बांसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ़, सलूम्बर एवं चित्तौड़गढ़ की बड़ी सादड़ी तहसील)

➜ वर्षा – 50-110 सेमी.

➜ फसल प्रारूप ➜ रबी = गेहूँ, अफीम, चना
➜ खरीफ = मक्का, चावल, गन्ना

10. V ➜ आर्द्र द. पू. मैदान-

➜ विस्तार – कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़

➜ वर्षा – वर्षा - 65-110 सेमी

➜ फसल प्रारूप ➜ रबी = गेहूँ, चना, सरसों, मसाला फसलें
➜ खरीफ = मक्का, गन्ना, चावल, सोयाबीन

NOTE- कृषि जलवायु प्रदेश में

सबसे बड़ा	सबसे छोटा
Ist - IC	Ist - IV B
2nd - IA	2nd - I B

Springboard ACADEMY

✓ कृषि के प्रकार

- वैज्ञानिक प्रकार
- सामान्य प्रकार

1. वैज्ञानिक प्रकार-

कृषि	उत्पादन
सेरीकल्चर	रेशम / रेशम कीट
पिसीकल्चर	मछली / मत्स्य पालन
एपिकल्चर	शहद / मधुमक्खी पालन
विटीकल्चर	अंगूर
हॉर्टीकल्चर	बागवानी (फल, फूल, सब्जी)
पोमोकल्चर	फल
फ्लोरीकल्चर	फूल
ऑलेरीकल्चर	सब्जियाँ
ऑलिविकल्चर	ऑलिव/जैतून
सिल्वीकल्चर	वन
वर्मीकल्चर	केंचुआ

२. सामान्य प्रकार-

(i) मिश्रित कृषि- कृषि एवं पशुपालन संयुक्त रूप से करना।

NOTE- राजस्थान में मिश्रित कृषि सर्वाधिक बाड़मेर में की जाती है।

(ii) बारानी कृषि- वह कृषि जो मानसून आधारित होती है।

NOTE- राजस्थान में बारानी कृषि सर्वाधिक बाड़मेर में की जाती है।

Springboard Academy

(iii) शुष्क कृषि- वह कृषि जो 75 cm से कम वर्षा पर आधारित हो, जैसे- बाजरा, मूंग, मोठ, ग्वार, चना।

(iv) आर्द्र कृषि- वह कृषि जो 75 cm से अधिक वर्षा पर आधारित हो, जैसे- गन्ना, चावल, गेंहू, कपास

(v) मोनोकल्चर- एक कृषि वर्ष में एक खेत में एक फसल का उत्पादन।

(vi) ड्यूओकल्चर- एक कृषि वर्ष में एक खेत में दो फसलों का उत्पादन।

(vii) ओलिगोकल्चर- एक कृषि वर्ष में एक खेत में तीन फसलों का उत्पादन।

(viii) रिलेकल्चर- रिले कृषि बहुफसल की एक पद्धति है जिसमें बोई गई फसल के साथ दूसरी फसल को बोया जाता है।

NOTE - कृषि वर्ष का अर्थ- 1 जुलाई से 30 जून

(ix) खड़ीन कृषि- पश्चिमी राजस्थान में पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा शुरु की गई कृषि 'खड़ीन कृषि' कहते है।

➥ यह कृषि मुख्यतः जैसलमेर में प्रचलित है।

(x) स्थानांतरित कृषि / झूमिंग कृषि- पेड़ो को काटकर/ जलाकर की जाने वाली कृषि। (अन्य नाम- कर्तन/ दहन कृषि, राजस्थान में -'वालरा')

➥ राजस्थान में स्थानांतरित कृषि - 1. चिमाता → अरावली क्षेत्र में
2. दजिया → मैदानी क्षेत्र में

➥ राज. में स्थानांतरित कृषि मुख्यतः डूंगरपुर, बांसवाड़ा, उदयपुर में

Springboard ACADEMY

की जाती है जिसे 'आदिवासियों की कृषि' एवं 'पर्यावरण की दुश्मन' भी कहा जाता है।

✓ कृषि का वर्गीकरण

- मौसम/ऋतु के आधार पर वर्गीकरण
  - खरीफ या स्यालू
  - रबी या उनालू
  - जायद
- उपयोग के आधार पर वर्गीकरण
  - खाद्यान्न फसलें
  - दलहन फसलें
  - तिलहन फसलें
  - रेशेदार फसलें
  - व्यापारिक फसलें
  - पेय फसलें

	खरीफ या स्यालू	रबी या उनालू	जायद
बुआई –	जून-जुलाई	Oct. NOV.	मार्च-अप्रेल
कटाई –	Sep. Oct.	मार्च-अप्रेल	May-June

मौसम/ऋतु के आधार पर वर्गीकरण

1. खरीफ या स्यालू फसलें –

- अनाज - बाजरा, ज्वार, चावल, मक्का, रागी
- दलहन - मूंग, मोठ, चंवला, अरहर (तूर) उड़द
- तिलहन - तिल, सोयाबीन, मूँगफली, अरण्डी, सूरजमुखी, सूर्यमुखी
- नकदी/व्यापारिक फसले - कपास, गन्ना, ग्वार, जूट (सुनहरा रेशा)

२. रबी फसलें/उनालू फसलें-

- अनाज - गेहूं, जौ
- दलहन - मसूर, चना, मटर
- सब्जी प्रारूप - सरसों, जीरा/राई/सौंफ, लहसुन, प्याज, अदरक, मिर्च मसाला फसलें, मैथी
- नकदी फसलें – तारामीरा, ईसबगोल, अफीम, तंबाकू, अलसी।

Springboard Academy

3. जायद फसलें- खरबूजा, तरबूज, सब्जियाँ, ककड़ी, पशुओं का चारा।

उपयोग के आधार पर वर्गीकरण

1. **अनाज / खाद्यान्न फसलें-**

वे फसले जो खाने या भोजन के रूप में उपयोगी होती है, उन्हे खाद्यान्न / अनाज फसले कहते है।

➤ उदाहरण-

- खरीफ ↓
  - बाजरा,
  - ज्वार
  - मक्का
  - चावल
- रबी ↓
  - गेहूँ
  - जौ

NOTE ➤ प्रमुख खाद्यान्न फसल

- भारत / विश्व ↓ चावल
- राजस्थान ↓ बाजरा

२. **दलहनी फसलें / भूमि उर्वरक फसलें-**

वे फसलें जो कृषि भूमि की उर्वरकता को बढ़ाती है, उन्हें दलहन / भूमि उर्वरक फसले कहते है।

➤ उदाहरण- खरीफ- मूंग, मोठ, चंवला, उड़द।
रबी - चना, मसूर, मटर

NOTE- राजस्थान की प्रमुख दलहन फसल चना है।

3. **तिलहन फसल-**

वे फसलें जिनसे तेल प्राप्त होता है उन्हें तिलहन फसलें कहते है।

➤ उदाहरण- खरीफ ➤ तिल, मूँगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी, अरण्डी
रबी ➤ सरसों, राई, अलसी, तारामीरा

NOTE ➤ राजस्थान की प्रमुख तिलहन फसल सरसों है।

Springboard ACADEMY

अन्य तिलहन पादप

- Olive/ जैतून → उपयोग/ USE → खाद्य तेल एवं औषधी में
- HoHoba-or-Jojoba → स्नेहक
- रतनजोत/ जेट्रोफा एवं करंज → बायोडिजल

4. **रेशेदार फसलें-**

1. कपास (सफेद सोना) → भारत/ राजस्थान की 'प्रमुख रेशेदार फसल'
2. जूट/ पटसन (गोल्डन फाईबर/ सुनहरा रेशा)
3. बाँस (आदिवासियों का हरा सोना/ ईमारती लकड़ी)
4. अलसी (तीसी)

5. **नकदी/ व्यापारिक फसलें-**

वे फसलें जो औद्योगिक क्षेत्र में अधिक उपयोगी है, उन्हें नकदी/ व्यापारिक फसलें कहा जाता है।

→ उदाहरण- कपास, ग्वार, गन्ना, तिलहन, तम्बाकू

→ देश या राज्य की प्रमुख व्यापारिक फसल कपास है।

6. **पेय फसलें-**

वे फसले जो पेय/ पीने के रूप में उपयोगी हो, उन्हें पेय फसलें कहा जाता है।

→ जैसे - चाय, कॉफी (कहवा) तंबाकू, गन्ना।

प्रमुख फसलों की भौगोलिक दशाएँ

फसल	वर्षा	तापमान	मिट्टी
बाजरा	25-50	25°C- 35°C	रेतीली, जलोढ़
जौ	50-100	15°C-20°C	जलोढ़
गेहूँ	50-100	15°C-20°C	जलोढ़
सरसों	50-100	15°C- 20°C	जलोढ़
कपास	50-100	21°C- 24°C	काली
मक्का	50-100	21°C- 24°C	लाल चिकनी
गन्ना	125-150	21°C- 24°C	जलोढ़
चावल	150-200	21°C- 24°C	जलोढ़

Springboard Academy

NOTE- रबी = 15°C - 20°C
खरीफ = 21°C - 28°C

बाजरे की भौगोलिक दशाएँ एवं वितरण-

- बाजरा खरीफ की फसल का उदाहरण है। जिसकी प्रमुख भौगोलिक दशाएँ—

1. वर्षा- 25-50 सेमी. वर्षा की आवश्यकता

2. तापमान- बाजरे के लिए अनुकूल तापमान 25°C-35°C होता है।

3. मिट्टी- बाजरा मुख्यतः जलोढ़ एवं रेतीली मिट्टी में उत्पादित होता है।

वितरण-

- बाजरा राजस्थान में मुख्यतः उत्तरी-पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र व पूर्वी मैदान में उत्पादित होता है।

जिसमें प्रमुख जिले-
1st - अलवर
2nd - बाड़मेर
3rd - जयपुर

बाजरे की प्रमुख उच्च गुणवत्ता वाली किस्में-

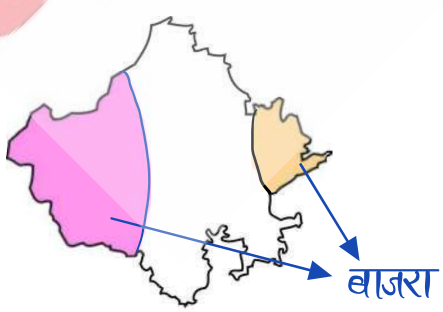

- राज 171
- RCB-2
- RCB-911
- RHB-30

Springboard ACADEMY

राजस्थान कृषि फसलें

प्रमुख फसलों के उत्पादन वाली किस्में (रिपोर्ट-२०२१-२२)

फसल	सर्वाधिक उत्पादन	सर्वाधिक बुवाई क्षेत्रफल
1. गेहूँ	(1) श्री गंगानगर (२) हनुमानगढ़. (3) अलवर	(1) हनुमानगढ़. (२) श्री गंगानगर
२. बाजरा	(1) अलवर, (२) जयपुर, (3) दौसा	(1) बाड़मेर (२) जोधपुर
3. मक्का	(1) चितौड़. (२) भीलवाड़ा (3) उदयपुर	(1) भीलवाड़ा (२) उदयपुर
4. कपास	(1) हनुमानगढ़. (२) श्री गंगानगर (3) जोधपुर	(1) हनुमानगढ़. (२) श्री गंगानगर
5. गन्ना	(1) श्री गंगानगर (२) चितौड़. (3) बूंदी	(1) श्री गंगानगर (२) चितौड़.
6. जौ	(1) जयपुर (२) श्रीगंगानगर (3) सीकर	(1) जयपुर (२) श्रीगंगानगर
7. चावल	(1) बूंदी (२) हनुमानगढ़. (3) कोटा	(1) बूंदी (२) हनुमानगढ़.

प्रमुख फसलों की उच्च गुणवत्ता वाली किस्में-

1. बाजरा
   - RAJ-171
   - RCB-2
   - RCB-911
   - RHB-30

२. कपास
   - नरमा
   - बीकानेरी नरमा
   - PST-9
   - US-81
   - US-51
   - US-71

कोटा-बूंदी = बासमती

बांसवाड़ा = माही सुगंधा

Springboard ACADEMY

3. गेहूँ
- M07-नबी (मरू गेहूँ-नबी)
- लेमी (काला गेहूँ)
- कल्याण सोना (1482)
- सोनालिका
- मालविका
- कोहिनूर
- दुर्गापुरा-65 एवं चम्बल 65

4. चावल
- बासमती
- माहीसुगंधा
- परमल
- चम्बल
- पद्मा
- जमुना

5. गन्ना
- CO-419
- CO-449
- CO-1007
- CO-1111

6. सरसों
- पूसा बोल्ड
- राजविजय सरसों-2
- पूसा सरसों-25
- पूसा सरसों-21

7. मक्का
- माही धवल
- माही कंचन
- HM-4
- HM-8
- HM-9
- अरुण
- किरण
- प्रभात

8. जौ
- करण
- कैलाश
- केदार
- ज्योति

Springboard Academy

कृषि विकास

- कृषि अनुसंधान केन्द्र
- कृषि उत्कृष्टता केन्द्र
- कृषि विश्वविद्यालय
- कृषि नीतियाँ
- K-3 → 'कृषक कल्याण कोष'
- कृषि निवेश कार्यक्रम (GRAM)

1. कृषि अनुसंधान केन्द्र -

- (a.) केन्द्र सरकार (ICAR)
- (b) राज्य सरकार

(a.) केन्द्र सरकार

- ICAR [Indian Counsil Of Agricultural Research]
  (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

शुष्क बागवानी, बीछवाल (बीकानेर), (1993)

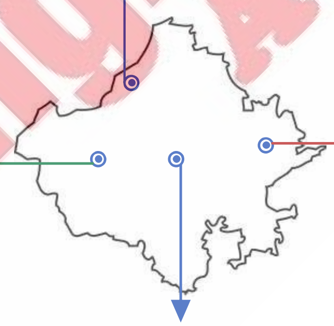

रेपसीड एवं सरसों अनु॰ केन्द्र (सेवर, भरतपुर) - 1993

CAZRI → 1959 (जोधपुर)

बीजीय अनुसंधान केन्द्र, तबीजी (डुमाडा) - अजमेर, 2000

(b) राज्य सरकार

- RARI = [Rajasthan Agricultural Research Institute]
  ↳ दुर्गापुरा, जयपुर → 1953

- बेर अनुसंधान केन्द्र
- खजूर अनुसंधान केन्द्र
  } → बीछवाल (बीकानेर)
- बाजरा अनुसंधान केन्द्र - जोधपुर & बाड़मेर
- इसबगोल अनुसंधान केन्द्र - जोधपुर

Springboard Academy

- मक्का अनुसंधान केन्द्र - बांसवाड़ा
- चावल अनुसंधान केन्द्र - बांसवाड़ा
- ज्वार अनुसंधान केन्द्र - वल्लभनगर (उदयपुर)

२. कृषि उत्कृष्टता केन्द्र-

उत्कृष्टता केन्द्र	जिले
1. खजूर	सगरा भोजका (जैसलमेर)
२. बाजरा	जोधपुर
3. अंजीर	सिरोही (प्रस्तावित)
4. नींबू वर्गीय पादप/ मसाला एवं औषधीय पादप	झालावाड़
5. नींबू वर्गीय पादप	कोटा (नांता)
6. सब्जी	बूंदी
7. सीताफल	चित्तौड़
8. अमरूद	1st- देवडावास - टोंक 2nd- स. माधोपुर
9. एपीकल्चर	टोंक (प्रस्तावित)
10. फूल/ पुष्प	S. माधोपुर
11. अनार	बस्सी (जयपुर ग्रामीण)
12. ड्रेगन फ्रूट	बस्सी (जयपुर ग्रामीण)
13. ऑलिव / जैतून	बस्सी (जयपुर ग्रामीण)
14. आँवला, आम, जैतून	खैमरी (धौलपुर)

Springboard Academy

3. कृषि विश्वविद्यालय-

1st → स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय = बीकानेर (१९८७)

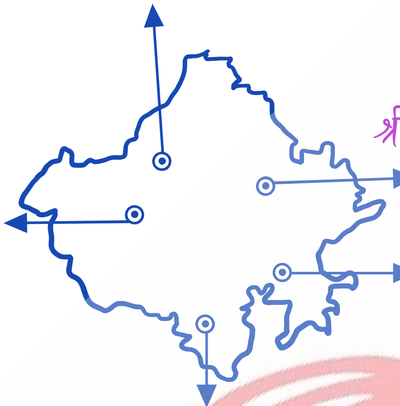

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय (जोबनेर, जयपुर ग्रामीण - 2013)

जोधपुर कृषि विश्व. (मंडोर), 2013

कृषि विश्वविद्यालय, बोरखेड़ा, (कोटा) - 2013

2nd → महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (उदयपुर) (१९९९)

4. कृषि नीतियाँ-

- राज्य कृषि नीति → 26 जून 2013
- जैविक कृषि नीति → जून 2017
- कृषि प्रसंस्करण नीति
  कृषि व्यवसाय
  कृषि निर्यात प्रोत्साहन
  नीति - 2019

5. K-3 (कृषक कल्याण कोष) - स्थापना - dec. 2019

उद्देश्य- किसानों को उनकी कृषि फसल/उपज की उचित कीमत उपलब्ध करवाना।

→ कुल कोष - 7,500 करोड़ ₹

6. राजस्थान में आयोजित GRAM = Global Rajasthan Agritech Meet

- Ist - Gram → जयपुर NOV. 2016
- IInd - Gram → कोटा May - 2017
- IIIrd - Gram → उदयपुर NOV. - 2017

Springboard ACADEMY

पशु सम्पदा

A. परिचय

B. पशुगणना

C. पशुओं की प्रमुख नस्लें

D. पशुओं के अनुसंधान केन्द्र

E. पशुओं से सम्बन्धित प्रमुख रोग

F. पशु मेले

G. पशुओं से सम्बन्धित योजनाएँ

A. परिचय

- पशु सम्पदा अर्थव्यवस्था में प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा है जो मिश्रित एवं शुष्क कृषि का महत्वपूर्ण हिस्सा है।
- अर्थव्यवस्था में कृषि एवं सम्बन्धित क्षेत्रों में पशुधन क्षेत्र का अंश/योगदान 48.58 प्रतिशत है।
- राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में पशुपालन का योगदान लगभग 10.99% है।

कृषि सम्बन्धित क्षेत्र-

- कृषि फसल = 44.53 %
- पशुधन = 48.58 %
- वानिकी क्षेत्र = 6.40 %
- मत्स्य क्षेत्र = 0.49 %

Springboard ACADEMY

B. पशुगणना

- पशुगणना, पशुपालन विभाग (1958), जयपुर के द्वारा करवाई जाती है।
- पशुगणना का समय = 5 वर्ष में 1 बार (प्रथम पशुगणना = 1919)
- नवीनतम पशुगणना = 2019 (20 वीं पशुगणना) के अनुसार–

राजस्थान में कुल पशु सम्पदा

2012	2019
577.32 लाख	568.01 लाख

कमी −1.61 % (9.31 लाख)

- 20 वीं पशुगणना के अनुसार राजस्थान मे पशु सम्पदा देश की कुल पशु सम्पदा का = 10.60 प्रतिशत
- 20 वीं पशुगणना के अनुसार राजस्थान में सर्वाधिक पाए जाने वाले पशु –

1st - बकरी = 36.70 %
IInd - गाय = 24.57 %
IIIrd - भैंस = 24.10 %
IVth - भेड़ = 13.91 %

देश की वह पशु सम्पदा जो राजस्थान में सर्वाधिक पाई जाती है – ऊँट, गधा, बकरी इत्यादि।

पशु	राज० का देश में योगदान
ऊँट	84.43 %
गधे	18.91 %
बकरी	10.64 %

Springboard ACADEMY

२० वीं पशुगणना के अनुसार राजस्थान में पशुघनत्व – 166/km²

सर्वाधिक

1. डूँगरपुर – 433
2. बाँसवाड़ा – 386
3. दौसा – 308
4. जयपुर – 208

न्यूनतम

1. जैसलमेर – 62
2. बीकानेर – 90
3. बारां – 110
4. चुरू – 117

२० वीं पशुगणना के अनुसार सर्वाधिक बढ़ोतरी वाले पशु

संख्या के आधार पर

1. भैंस
2. गाय

प्रतिशत के आधार पर

1. भैंस (5.53%)
2. गाय (4.60%)

२० वीं पशुगणना के अनुसार सर्वाधिक कमी वाले पशु

संख्या के आधार पर

1. भेड़
2. बकरी
3. ऊँट
4. सूअर
5. गधा

प्रतिशत के आधार पर

1. गधा – 71.31%
2. खच्चर – 60.33%
3. सुअर – 34.87%
4. ऊँट – 34.69%
5. भेड़ – 12.95%

Springboard ACADEMY

8. राजस्थान की पशु नस्लें

18 वीं पशुगणना (2007) पहली बार पशुओं की नस्ल के आधार पर की गई पशुगणना थी।

1. बकरी (सर्वाधिक - बाड़मेर, न्यूनतम - धौलपुर)

नस्ल	क्षेत्र	विशेष
1. मारवाड़ी / लोही	उत्तरी - पश्चिमी राजस्थान (जोधपुर, पाली, जालौर)	• मांस के लिए प्रसिद्ध
2. जखराना / अलवरी	अलवर, बहरोड़	• सर्वाधिक दूध देने वाली नस्ल।
3. शेखावाटी	सीकर, झुंझुनूं	• बिना सींग वाली बकरी • काजरी वैज्ञानिकों द्वारा विकसित नस्ल
4. परबतसरी	नागौर, अजमेर टोंक	• पौष्टिक दूध देने वाली नस्ल
5. बारबरी	पूर्वी राजस्थान (अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर)	• सर्वाधिक सुन्दर
6. सिरोही	सिरोही, जालौर	• मांस के लिए प्रसिद्ध
7. जमनापरी	हाड़ौती (कोटा, बूंदी, झालावाड़)	• मांस व दूध के लिए प्रसिद्ध

NOTE- 1. वरुण गाँव (नागौर) की बकरियाँ सर्वश्रेष्ठ नस्ल की मानी जाती है।
2. बकरी को गरीब की गाय या चलता-फिरता फ्रिज कहा जाता है।

Springboard ACADEMY

NOTE- बकरी के मांस को 'चेवण' कहा जाता है।

२. गौवंश - (सर्वाधिक - बीकानेर, जोधपुर व न्यूनतम- धौलपुर)

नस्ल	क्षेत्र	विशेष
1. राठी	बीकानेर, जैसलमेर, गंगानगर	• सर्वाधिक दूध देने वाली • राजस्थान की कामधेनु • यह लाल सिंधी व साहीवाल का मिश्रण है।
२. थारपारकर	जैसलमेर, बाड़मेर व जोधपुर	सिन्ध प्रान्त (पाक) व मालानी (बाड़मेर) की नस्ल
3. गिर	अजमेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़	मूलतः गुजरात (गिर) की नस्ल
4. नागौरी	नागौर	• नागौरी बैल दौड़ने में, भारवहन में तथा कृषि कार्यों में सर्वश्रेष्ठ माने जाते है।
5. कांकरेज	बाड़मेर व जालौर	मूल स्थान- गुजरात
6. मेवाती	अलवर, भरतपुर	बोझा ढोने हेतु
7. हरियाणवी	सीकर, झुंझुनू	मूल स्थान- हरियाणा
8. मालवी	द० पूर्वी राजस्थान	मूल स्थान- मालवा (M.P)
9. सांचौरी	जालौर, सिरोही	डेयरी उद्योग हेतु प्रसिद्ध

Springboard ACADEMY

* गायों की विदेशी नस्लें-

1. जर्सी → मूल स्थान- अमेरिका
2. रेड डेन → मूल स्थान- डेनमार्क
3. हॉलिस्टिन → मूल स्थान- हॉलेण्ड + अमेरिका
   - शरीर पर काले व सफेद चकते।
   - सर्वाधिक दुग्ध देने वाली गाय की नस्ल।

3. भैंस :- (सर्वाधिक - जयपुर , न्यूनतम - जैसलमेर)

नस्ल	क्षेत्र	विशेष
1. मुर्रा (खुंडी)	पूर्वी राजस्थान	राज. में सर्वाधिक पाए जाने वाली व सर्वाधिक दुग्ध देने वाली नस्ल।
2. सूरती	उदयपुर, जालौर, सिरोही	मूल स्थान - गुजरात
3. जाफराबादी	द. पश्चिमी राजस्थान	मूल स्थान - गुजरात
4. मेहसाना	द. पश्चिमी राजस्थान	मूल स्थान - गुजरात
5. भदावरी	पूर्वी राजस्थान	मूल स्थान - उत्तरप्रदेश "सर्वाधिक वसा वाला दुग्ध"

भैंसों की अन्य नस्लें-

1. नागपुरी
2. रथ
3. राठ

Springboard ACADEMY

5. भेड़ (सर्वाधिक - बाड़मेर, न्यूनतम - बांसवाड़ा

नस्ल	क्षेत्र	विशेष
मालपुरी	जयपुर, टोंक, स॰ माधोपुर	ऊन मोटी होने के कारण गलीचों के लिए उपयुक्त
चोकला	झुंझुनूं, सीकर, बीकानेर	सर्वश्रेष्ठ किस्म की ऊन प्राप्त होती है, जिसे 'भारत की मेरिनो' कहते है।
सोनाड़ी/ चनोथर	उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़	लम्बे कान वाली
नाली	हनुमानगढ़, गंगानगर	घग्घर नदी क्षेत्र में पाई जाने वाली नस्ल।
पूगल	बीकानेर	
मगरा	बीकानेर	'बीकानेरी चोकला' कहतें हैं
मारवाड़ी	जोधपुर, बाड़मेर, नागौर, पाली	राजस्थान में सर्वाधिक पाई जाने वाली, सर्वाधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता
जैसलमेरी	जैसलमेर, जोधपुर	• सर्वाधिक ऊन प्राप्त
खैरी	जोधपुर, पाली, नागौर	• ऊन गलीचों के लिए उपयुक्त

→ भेड़ की विदेशी नस्लें -

1. रूसी मैरिनों – टोंक, जयपुर, सीकर
2. रेम्बुल – टोंक
3. डोरसेट – टोंक
4. कोरिडेल – चित्तौड़

Springboard ACADEMY

(5.) ऊँट (सर्वाधिक - जैसलमेर, न्यूनतम - प्रतापगढ़)

राजस्थान के राज्य पशु →
- वन्यजीव में = चिकांरा (1981)
- पशुधन में = ऊँट (Sep. 2014)

नस्ल	क्षेत्र	विशेष
बीकानेरी	बीकानेर	• भार/बोझा ढोने के लिए, • आँख व कानों पर बाल
नाचना	जैसलमेर	सुंदरता व दौड़ के लिए प्रसिद्ध।
गोमठ	जोधपुर	ऊँट सवारी के लिए प्रसिद्ध।

★ अन्य नस्लें – सिंधि, कच्छी, मेवाती, मेवाड़ी

6. अश्व (सर्वाधिक - बीकानेर, बाड़मेर व न्यूनतम - डूँगरपुर)

नस्ल	क्षेत्र	विशेष
1. मालाणी	बाड़मेर (गुड़ा मालानी), बालोतरा (सिवाणा)	सर्वश्रेष्ठ घोड़े की नस्ल
2. मारवाड़ी	पश्चिमी राजस्थान	
3. काठियावाड़ी	बाड़मेर, जालौर	इसका सिर अरबी घोड़े जैसा होता है।

7. गधा (सर्वाधिक - बाड़मेर)

8. कुक्कुट (सर्वाधिक - अजमेर, उदयपुर)

9. सूअर (सर्वाधिक - जयपुर, भरतपुर)

10. खच्चर (सर्वाधिक - अलवर)

Springboard Academy

७. पशु प्रजनन एवं अनुसंधान केन्द्र

- राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केन्द्र – जोहड़बीड़ (बीकानेर)
- केन्द्रीय पशु अनुसंधान केन्द्र – सूरतगढ़ (श्री गंगानगर)
- भेड़ एवं ऊन अनुसंधान केन्द्र – अविकानगर (टोंक)
- भेड़ प्रजनन केन्द्र – फतेहपुर (सीकर), इसकी एक इकाई = बांकलिया (डीडवाना कुचामन)
- भैंस अनुसंधान केन्द्र – वल्लभनगर (उदयपुर)
- भैंस प्रजनन केन्द्र – डग (झालावाड़), कुम्हेर (डीग)
- बुल मदर फार्म – चाँदन गाँव (जैसलमेर)
- बकरी प्रजनन केन्द्र – रामसर (अजमेर)
- सूअर प्रजनन केन्द्र – अलवर
- अश्व प्रजनन एवं अनुसंधान केन्द्र – केरू (जोधपुर)

८. पशुओं से सम्बन्धित प्रमुख रोग

पशु रोग	प्रभावित पशु	पशु रोग	प्रभावित पशु
1. शीप पॉक्स	भेड़, बकरी	5. बर्ड फ्लू (H5N1)	मुर्गियों में
२. ब्लू टंग	भेड़	6. सर्रा (तिवरसा)	मुख्यतः ऊँटों में
3. स्वाइन फ्लू (H1N1)	सूअर	7. रानीखेत	मुर्गियों में
4. रैबीज	श्वान (कुत्ता)	8. खुरपका-मुँहपका	गाय व बैल

Springboard Academy

F. राजस्थान के प्रमुख पशु मेले

पशु मेला	स्थान	पशु गौवंश
1. श्री बलदेव पशु मेला	मेड़ता (नागौर)	नागौरी
2. श्री तेजाजी पशु मेला	परबतसर (नागौर)	नागौरी
3. श्री रामदेव पशु मेला	मानासर (नागौर)	नागौरी
4. श्री मल्लीनाथ पशु मेला	तिलवाड़ा (बाड़मेर)	थारपारकर, कांकरेज
5. चन्द्रभागा पशु मेला	झालरापाटन (झालावाड़)	मालवी
6. श्री गोमतीसागर पशु मेला	झालरापाटन (झालावाड़)	मालवी
7. श्री जसवन्त पशु मेला	भरतपुर	हरियाणवी
8. गोगामेड़ी पशु मेला	हनुमानगढ़	हरियाणवी
9. महाशिवरात्री पशु मेला	करौली	हरियाणवी
10. कार्तिक पशु मेला	पुष्कर (अजमेर)	गिर

* उपरोक्त सभी पशु मेले पशुपालन विभाग, जयपुर द्वारा आयोजित।

Springboard ACADEMY

G. पशु विकास से संबंधित योजनाएँ

1. गोपाल योजना –

- शुरुआत - 2 अक्टूबर, 1990 (दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान, 10 जिले)
- उद्देश्य - ग्रामीण क्षेत्र में पशुओं की नस्लों में सुधार करना और युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करना।

२. कामधेनु योजना-

- शुरुआत- 1997-98 में
- उद्देश्य- गौवंश संबंधी उन्नत नस्ल के प्रजनन केन्द्रों की स्थापना करना।

3. ADMAS स्कीम- (Animal Diseases Monitoring and Surveillance)

- शुरुआत- 1999
- उद्देश्य- ICAR (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्) के माध्यम से गाय और भैंस की नस्लों को रोगमुक्त करना।

4. राजीव गाँधी कृषि एवं पशुपालन विकास मिशन-

- शुरुआत- 19 जनवरी, २०10
- उद्देश्य- पशु विकास नीति में निर्धारित उद्देश्यों को पुरा करना।

5. मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना-

- शुरुआत- 15 Aug. २०1२
- उद्देश्य- राज्य सरकार द्वारा पशु विकास के लिए आवश्यक दवाईयाँ निःशुल्क उपलब्ध करवाना।

6. अविका कवच योजना-

- शुरुआत- २004, पुनः २009, पुनः २016
- यह भेड़ों की बीमा योजना है जिसमें सब्सिडी—
  - SC/ST और BPL = 80%
  - अन्य पशुपालकों को = 70%

Springboard ACADEMY

7. भामाशाह पशु बीमा योजना :-

- शुरुआत- २३ जुलाई २016
- उद्देश्य- भामाशाह कार्ड धारक पशुपालकों के पशुओं का बीमा अनुदान—
  - SC/ST/BPL को = 70%
  - सामान्य श्रेणी को = 50%

8. गौशाला बायोगैस सहभागिता योजना :-

- 1 अप्रैल, २018 से प्रारम्भ
- उद्देश्य - गौशाला को आत्मनिर्भर बनाना
- एक गौशाला में एक बायोगैस सयंत्र लगाया जाएगा।
- इसके लिए लागत का 50% या अधिकतम 40 लाख तक अनुदान।

9. मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादक संबल योजना- (शुरुआत- 1 feb, २019)

- अनुदान राशि = २ ₹/ लीटर से 5 ₹/ लीटर (सरस डेयरी में वितरण पर)

10. नंदी गौशाला जनसहभागिता योजना :-

- प्रारम्भ - २9 अगस्त, २019
- 90:10 में सरकारी सहायता
- 16 नंदी गौशाला स्थापित की जा चुकी है।

11. कामधेनु बीमा योजना- (शुरुआत - 6 सितम्बर, २0२3)

- दुधारू पशु (गाय, भैंस) के लिए
- निःशुल्क बीमा - 40,000 ₹ प्रति पशु (एक परिवार में अधिकतम २ पशु)
- यदि किसी पशुपालक के पास दो से अधिक गाय, भैंस है तो अपेक्षाकृत अधिक दुधारू व स्वस्थ पशु का बीमा किया जाएगा।

Springboard ACADEMY

१२. मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना-

शुरुआत - बजट जुलाई, २०२५

- 5 लाख – दुधारू गाय, भैंस, भेड़, बकरी
- 1 लाख – ऊँट/ ऊँटनी
- बीमा राशि – अनुदान 50% से बढ़ाकर 75%

NOTE- प्रत्येक परिवार से 1 पशु का बीमा निःशुल्क किया जाएगा।

H. अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

1. पशुपालन विकास कोष = २50 क. ₹

२. ऊँट → ऊँट संरक्षण एवं विकास मिशन (बजट जुलाई, २०२५)
   → नवजात ऊँट के पालन पोषण की राशि 10,000 ₹ → २0,000 ₹

Springboard ACADEMY

उद्योग / Industries

- ✓ सामान्य परिचय
- ✓ उद्योगों का वर्गीकरण
- ✓ औद्योगिक विकास
- ✓ अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

A. सामान्य परिचय –

औद्योगिक विकास की दृष्टि से राजस्थान पिछड़ा हुआ राज्य है क्योंकि–

- राजस्थान में जलवायु की विपरित दशाएँ पाई जाती है।
- आधारभूत अवसंरचना का अल्प विकास
- औद्योगिक क्षेत्र में निवेश कम होना।
- कुशल श्रमिकों का अभाव।

कोटा को तीव्र औद्योगिक विकास के कारण राजस्थान की "औद्योगिक नगरी" कहा जाता है।

↳ वर्तमान में राजस्थान में-

- सर्वाधिक उद्योग / फैक्ट्री - जयपुर
- सर्वाधिक वृहद उद्योग - अलवर

B. उद्योगों का वर्गीकरण–

उद्योगों का वर्गीकरण

- आकार के आधार पर
- विनिर्माण के आधार पर
- स्वामित्व के आधार पर

Springboard Academy

1. आकार के आधार पर- आकार के आधार पर उद्योगों को तीन भागों में बाँटा गया है, जिसका आधार पूँजी एवं टर्नओवर है।

उद्योग	पूँजी / निवेश	टर्नओवर
(i) सूक्ष्म	1 करोड़	5 करोड़
(ii) लघु	1 - 10 करोड़	5 - 50 करोड़
(iii) मध्यम	10 - 50 करोड़	50 - 250 करोड़

कुटीर उद्योग- निम्न तकनीक पर आधारित उद्योग जिनका उद्देश्य लाभ प्राप्त करने के स्थान पर आजीविका चलाना होता है।

विनिर्माण के आधार पर- विनिर्माण के आधार पर उद्योगों का कच्चे माल के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है।

विनिर्माण के आधार पर

- कृषि आधारित उद्योग
- खनिज आधारित उद्योग
- वनोत्पाद आधारित उद्योग
- इंजीनियरिंग / तकनीकी उद्योग
- रासायनिक उर्वरक उद्योग

I. कृषि आधारित उद्योग-

1. सूती वस्त्र उद्योग
2. चीनी उद्योग
3. ऊन उद्योग
4. वनस्पति घी एवं सरसों तेल उद्योग
5. डेयरी उद्योग
6. बायोडिजल
7. जैतून तेल उद्योग

1. सूती वस्त्र उद्योग- (कच्चा माल - कपास)

↳ प्रथम सूती वस्त्र मिल - 'दी कृष्णा कॉटन मिल'

Springboard Academy

↳ स्थापना- 1889 (ब्यावर, अजमेर)

↳ संस्थापक- सेठ दामोदर दास राठी एवं कर्नल डिक्सन

सार्वजनिक सूती वस्त्र उद्योग

- 1st एडवर्ड (ब्यावर-1906)
- विजयनगर (ब्यावर)
- महालक्ष्मी (ब्यावर) (1925)

राजस्थान की सहकारी सूती वस्त्र मिलें

- राजस्थान सहकारी कताई मिल, गुलाबपुरा (भीलवाड़ा - 1965) → (प्रथम सहकारी सूती वस्त्र मिल)
- गंगापुर सहकारी कताई मिल, (भीलवाड़ा, 1981)
- श्रीगंगानगर सहकारी कताई मिल (हनुमानगढ़ - 1978)
- गुलाबपुरा स्पिनिंग & जिनिंग सहकारी मिल

SPINFED (स्पिनफैड) - Rajasthan State Cooperative Spinning & Ginning Mills federation Ltd.

स्थापना- 1 अप्रैल, 1993

यह सहकारी सूती वस्त्र मिलों का संघ है।

➢ अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

1. सूती वस्त्र उद्योग कृषि आधारित सबसे बड़ा उद्योग।
2. यह एक परम्परागत उद्योग है।
3. महिलाएँ इस उद्योग में सर्वाधिक कार्यरत है।

- **महाराजा उम्मेद मिल्स लिमिटेड-** (पाली)
  ↳ 1939 (राजस्थान की सबसे बड़ी सूती वस्त्र मिल)

NOTE:- भीलवाड़ा को 'राजस्थान का मैनचेस्टर'/ वस्त्रनगरी/ टैक्सटाइल सिटी कहा जाता है।

Springboard ACADEMY

उभरता हुआ वस्त्र नगर- भिवाड़ी

२. चीनी उद्योग-

(कच्चा माल- गन्ना एवं चुकन्दर)

राजस्थान में चीनी मिलें

- मेवाड़ शुगर मिल
  - १९३२ (चित्तौड़)
  - प्रथम निजी चीनी मिल
- उदयपुर शुगर मिल (1976)
- गंगानगर शुगर मिल (1937) श्री गंगानगर
  - ↓ प्रथम- सार्वजनिक चीनी मिल (1956)
- केशोरायपाटन शुगर मिल (1965 बूंदी)
  - ↓ प्रथम- सहकारी चीनी मिल

Note:- गंगानगर शुगर मिल एकमात्र शुगर मिल है जहाँ 1968 में चुकन्दर व गन्ने से चीनी बनाई गई। वर्तमान में यह बन्द है। जिसके द्वारा वर्तमान में निम्नलिखित उपक्रमों का संचालन किया जा रहा है,

गंगानगर शुगर मिल
- देशी शराब का निर्माण
- हैरिटेज लिकर का निर्माण (जयपुर)
- दी हाइटेक प्रिसिजन ग्लास फैक्ट्री (धौलपुर)
- सैनिटाइजर का निर्माण

३. ऊन उद्योग :- [आधार- पशु सम्पदा (भेड़, ऊँट)]

ऊन उत्पादन सर्वाधिक (२०२२-२३ के अनुसार)- 1. राजस्थान (47.98 %)
२. J&K

प्रमुख ऊन उद्योग-

1. केन्द्रीय ऊन बोर्ड - जोधपुर

Springboard Academy

ऊन कॉम्पलैक्स
↓
1. खारा (बीकानेर)
2. ब्यावर
3. नरबदखेड़ा
4. गुहाना (ब्यावर)

2. राजस्थान में सर्वाधिक ऊन उत्पादन - जोधपुर
3. राजस्थान में सबसे बड़ी ऊन मण्डी - बीकानेर
4. वूल टेस्टिंग प्रयोगशाला - बीकानेर
5. स्टेट वूल मिल - बीकानेर
6. ऊन प्रशिक्षण केन्द्र - जयपुर
7. केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान केन्द्र - अविकानगर (टोंक)
8. वर्स्टेड स्पिनिंग मिल्स - लाडनूं (डीडवाना-कुचामन) एवं चूरू

4. वनस्पति घी एवं सरसों तेल उद्योग-

- राजस्थान में प्रथम वनस्पति घी फैक्ट्री - भीलवाड़ा (स्थापना-1964)
- वर्तमान में वनस्पति घी का सर्वाधिक उत्पादन - जयपुर
- सरसों तेल का सर्वाधिक उत्पादन - जयपुर
- सरसों तेल के प्रमुख कारखानें -
  - चम्बल - जयपुर
  - वीर बालक - जयपुर
  - नेताजी - जयपुर
  - इंजन मार्का - भरतपुर

5. डेयरी उद्योग-

राजस्थान में डेयरी उद्योग का सर्वाधिक विकास - जयपुर में

राजस्थान राज्य डेयरी विकास निगम - 1975 (जयपुर)
↳ विश्व बैंक के सहयोग से।

Springboard Academy

डेयरी विकास के लिए राज्य में त्रिस्तरीय ढाँचा बनाया गया-

- **शीर्ष**
  RCDF - 1977
  राज. राज्य सहकारी संघ (जयपुर)
- **जिला स्तर पर-**
  जिला दुग्ध सहकारी संघ - 24
- **ग्रामीण स्तर पर-**
  प्राथमिक सहकारी दुग्ध समितियाँ- 18,781

RCDF (Rajasthan co-operative dairy federation) को राजस्थान डेयरी विकास निगम के स्थान पर बनाया गया।

NOTE :-

➤ राजस्थान में संचालित प्रमुख डेयरी-

- राजस्थान की प्रथम डेयरी - पद्मा (अजमेर), 1938
- वरमूल (WRMUL) – Western Rajasthan Milk Union Ltd (जोधपुर)
- उरमूल (URMUL) – Uttari Rajasthan Milk Union Ltd. (बीकानेर)
- गंगमूल (Gangmul)– Ganganagar Milk Union Ltd. (हनुमानगढ़)
- कैमल मिल्क डेयरी - Ist = बीकानेर, 2009 (जोड़बीड़)
  IInd = जैसलमेर, 2021 (पोकरण)
- मेट्रो डेयरी - गोविंदगढ़ (जयपुर ग्रामीण) ⟶ क्षमता- 11 लाख लीटर

➤ ऊँटनी के दुग्ध विपणन का केन्द्र जयपुर में स्थापित किया गया है।
क्षमता - 21000 लीटर / day

6. बायोडीजल-

- कच्चा माल - रतनजोत / जैट्रोफा एवं करंज
- बायोडीजल रिफाइनरी - कलड़वास (उदयपुर)
- बायोडीजल प्लांट - झामर कोटड़ा (उदयपुर)

Springboard Academy

7. जैतून तेल/ ऑलिव ऑयल-

- कच्चा माल- जैतून
- जैतून रिफाइनरी - लुणकरणसर (बीकानेर)

नोट:- ऑलिव टी-प्लांट जयपुर ग्रामीण (बस्सी) में स्थापित किया गया है।
↳ सहयोग - इजराइल

II. खनिज आधारित उद्योग-

- सीमेंट उद्योग
- काँच उद्योग
- नमक उद्योग
- मार्बल उद्योग
- ग्रेनाइट उद्योग
- अभ्रक उद्योग

1. सीमेंट उद्योग- [सर्वाधिक सीमेंट उत्पादन -चित्तौड़गढ़ (निम्बाहेड़ा)]

- कच्चा माल- चूना पत्थर, जिप्सम व सिलिका
- प्रथम सीमेंट फेक्ट्री - ACC (एसोसिएट सीमेंट कम्पनी) लाखेरी (बूंदी)
- स्थापना - 1915 ई. (उत्पादन 1917 ई.) (सहयोग- क्लिक निक्सन)

सफेद सीमेंट फैक्ट्री-

1. J.K व्हाइट सीमेंट फैक्ट्री - गोटन (नागौर), 1984
2. J.K व्हाइट सीमेंट फैक्ट्री - मांगरोल (चित्तौड़)
3. बिरला व्हाइट सीमेंट फैक्ट्री - खारियाखंगार (जोधपुर)

सीमेंट उत्पादन की प्रमुख इकाईयाँ-

- J.K सीमेंट फैक्ट्री - निम्बाहेड़ा (चित्तौड़गढ़)
- अल्ट्राटेक सीमेंट फैक्ट्री - चित्तौड़गढ़
- चेतक सीमेंट फैक्ट्री - चित्तौड़गढ़

Springboard Academy

- ✓ लाफार्ज सीमेंट फैक्ट्री - चित्तौडगढ़
- ✓ एसोसिएट सीमेंट फैक्ट्री - लाखेरी (बूँदी)
- ✓ बांगड़ सीमेंट फैक्ट्री - पाली
- ✓ बिनानी सीमेंट फैक्ट्री - पिंडवाड़ा (सिरोही)
- ✓ श्री सीमेंट फैक्ट्री = (3) → श्री गंगानगर, झुंझुनूं, ब्यावर
- ✓ श्री राम सीमेंट फैक्ट्री - श्री राम नगर (कोटा)
- ✓ ग्रासिम सीमेंट फैक्ट्री - कोटपुतली - बहरोड़
- ✓ मंगलम सीमेंट फैक्ट्री - मोडक (कोटा)
- ✓ जयपुर सीमेंट फैक्ट्री - सवाई माधोपुर
- ✓ अम्बुजा सीमेंट फैक्ट्री - • राबड़ियावास (ब्यावर) → पहले पाली में स्थित।
  - • मुंडवा - मारवाड़ (नागौर)
- ✓ वंडर सीमेंट फैक्ट्री - चित्तौड़
- ✓ J & K लक्ष्मी सीमेंट फैक्ट्री - सिरोही

3. काँच उद्योग-

कच्चा माल- सिलिका सैंड, सोडियम सल्फेट, शोरा

राजस्थान में काँच उद्योग का सर्वाधिक विकास - धौलपुर व अलवर

प्रमुख काँच फैक्ट्री

- **धौलपुर**
  - ➤ धौलपुर ग्लास फैक्ट्री
  - ➤ दी हाइटेक प्रिसिजन ग्लास फैक्ट्री
- **कोटा**
  - ➤ सेमकोर ग्लास फैक्ट्री
- **अलवर**
  - ➤ सेंट गोबेन ग्लास फैक्ट्री (भिवाड़ी, खैरथल - तिजारा)

3. नमक उद्योग-

• प्रमुख स्रोत- महासागरीय जल एवं खारे पानी की झील

• इस उद्योग का प्रमुख आधार राजस्थान में खारे पानी की झीलें हैं।

Springboard ACADEMY

नमक उद्योग

- सांभर → संचालन = हिन्दुस्तान सॉल्ट लिमिटेड द्वारा
  (जयपुर ग्रामीण)
  (सर्वाधिक नमक उत्पादन)
- पचपदरा (बालोतरा)
  (सर्वश्रेष्ठ श्रेणी का नमक)
- डीडवाना (नागौर)
  (निम्नतम श्रेणी का नमक)

4. मार्बल उद्योग-

- मार्बल उद्योग में राजस्थान का प्रथम स्थान है।
- राजसमंद मे सर्वाधिक मार्बल उत्पादन।
  - ↳ सर्वाधिक मार्बल प्रोसेसिंग इकाईयाँ
- किशनगढ़ (अजमेर) मार्बल मण्डी का सबसे बड़ा विपणन केन्द्र।
- राजस्थान का सफेद मार्बल (मकराना, डीडवाना कुचामन) विश्व प्रसिद्ध माना जाता है।

5. ग्रेनाइट उद्योग-

इस पत्थर का उत्पादन सर्वाधिक राजस्थान के जालोर, बाड़मेर सिरोही क्षेत्र से होता है।

- जालोर को राजस्थान में ग्रेनाइट सिटी कहा जाता है।

6. अभ्रक उद्योग-

- राजस्थान में अभ्रक ईंट बनाने का कारखाना - भीलवाड़ा
- भीलवाड़ा का अभ्रक / माईका सिटी भी कहा जाता है।
- उपयोग- अभ्रक से इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बनाए जाते है।

III. वनोत्पाद आधारित उद्योग-

- ➢ लकड़ी का नक्काशीदार फर्नीचर - बाड़मेर
- ➢ गोंद उत्पादन - चौहटन (बाड़मेर)

Springboard ACADEMY

- टसर रेशम उत्पादन (कार्यक्रम - 1986)
  ↳ उदयपुर, बांसवाड़ा, कोटा में संचालित किया गया।

IV. इंजीनियरिंग या तकनीकी उद्योग-

उद्योग	उत्पाद	स्थान
नेशनल इंजीनियरिंग कम्पनी	बॉल एवं बेरिंग	जयपुर
जयपुर मेटल्स	बिजली के मीटर	जयपुर
केप्सटन मीटर	पानी के मीटर	जयपुर, पाली
राजस्थान इले० कॉर्पोरेशन	टी.वी	जयपुर
मान इण्डस्ट्रीज	लोहे के दरवाजे एवं टॉवर निर्माण	जयपुर
केबल इण्डस्ट्रीज	केबल	कोटा
इंस्ट्रूमेंटेशन लिमिटेड	यंत्र/मशीन	कोटा
J&K इलेक्ट्रॉनिक्स	टी.वी.	कोटा
फ्लोर्सपार संयंत्र	लोहे के साथ मिलाकर संयंत्र निर्माण	डूंगरपुर
सिमको वैगन फैक्ट्री (1957)	रेलवे डिब्बों का निर्माण	भरतपुर

V. रासायनिक उर्वरक उद्योग-

- चम्बल फर्टिलाइजर्स एवं केमिकल्स - गढ़ेपान (कोटा)
- राष्ट्रीय केमिकल्स एवं फर्टिलाइजर्स (DAP - डाई-अमोनियम फॉस्फेट)
  - कपासन (चित्तौड़गढ़)
- राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स - डीडवाना (नागौर) - 1964
- पाइराइट एण्ड फॉस्फेट लिमिटेड - सलादीपुरा (सीकर)

Springboard Academy

स्वामित्व के आधार पर

- निजी उद्योग — व्यक्तिगत आधार
- सार्वजनिक उद्योग — सरकार का अधिकार
- सहकारी उद्योग — व्यक्तिगत एवं सरकार दोनों का अधिकार

सार्वजनिक उद्योग

1. केन्द्र सरकार के उपक्रम - 7
2. राज्य सरकार के उपक्रम - 23
   - 6 वैधानिक बोर्ड
   - 17 कम्पनी अधिनियम

1. केन्द्र सरकार के उपक्रम-

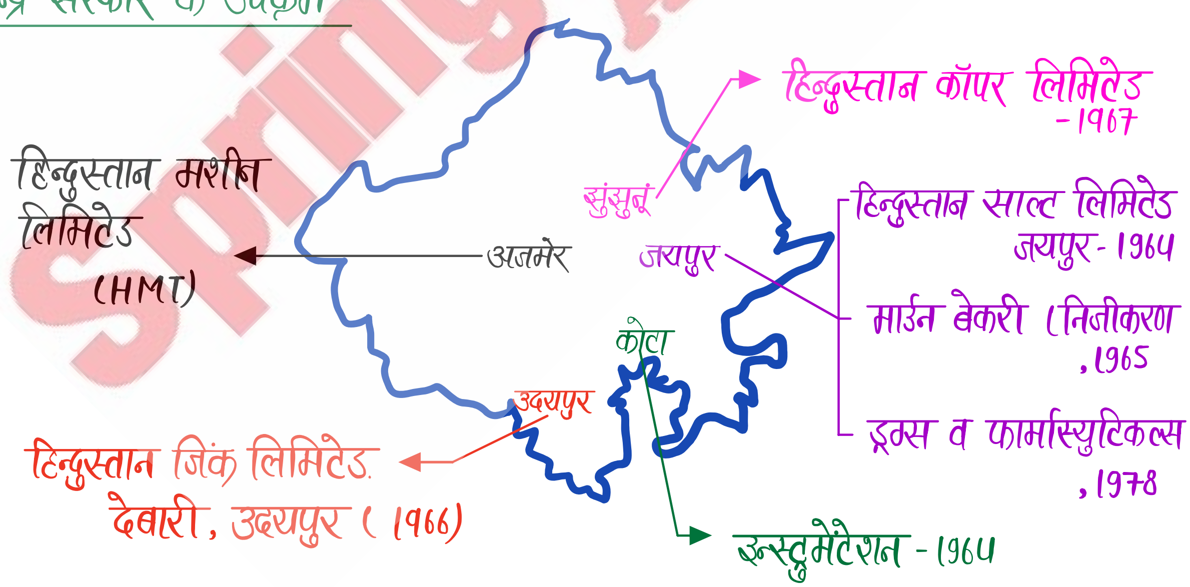

2. राज्य सरकार के उपक्रम-

वैधानिक बोर्ड- 6

- 1955 → राजस्थान वित्त निगम
- 1957 → कृषि भण्डारण निगम
- 1 Oct. 1964 → राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम (RSRTC)

Springboard Academy

1970 → राजस्थान राज्य हाउसिंग बोर्ड निगम (RHB)
1974 → राज्य कृषि विपणन बोर्ड
1975 → राज्य भूमि विकास निगम

कम्पनी अधिनियम - 17

राजस्थान के कम्पनी अधिनियम में संचालित उपक्रम - 17 है, जिसमें से प्रमुख-

1. RSMML – Raj State Mines & Minerals Ltd. (30 oct. 1974) उदयपुर
2. राज्य विद्युत वितरण निगम - जोधपुर, अजमेर, जयपुर
3. REIL - Rajasthan electronics & Instruments Ltd. - कनकपुर (जयपुर)
   → इसके द्वारा सॉफ्टवेयर IT, नवीकरणीय ऊर्जा संयंत्रों का निर्माण किया जाता है।

C. औद्योगिक विकास के प्रयास

- औद्योगिक नीति
- औद्योगिक पार्क व कॉम्पलैक्स
- औद्योगिक गलियारा
- औद्योगिक विकास योजनाएँ
- विशेष औद्योगिक क्षेत्र- (SEZ)
- औद्योगिक निवेश कार्यक्रम
- औद्योगिक विकास संस्थान

Springboard Academy

I. राजस्थान में औद्योगिक नीतियाँ-

- **सामान्य नीतियाँ**
  - 1978 (प्रथम)
  - 1991
  - 1994
  - 1998
  - 2010
  - 1 जुलाई २019 (नई औद्योगिक नीति)
- **MSME नीति (Micro Small Medium Enterprises Policy)**
  - २0 नवम्बर, 2015
  - 17 सितम्बर, २0२२
- **हैंडीक्राफ्ट/हस्तशिल्प नीति**
  - 17 सितम्बर, २0२२

II. विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ)- क्रियान्वयन- RIICO द्वारा

→ राजस्थान में सर्वाधिक SEZ जयपुर में स्थित है।

प्रमुख सेज	संबंधित क्षेत्र	जिला / स्थिति
बोरानाडा सेज	ग्वारगम, हैण्डीक्राफ्ट	जोधपुर (मानसरोवर)
सीतापुरा सेज	जेम्स & ज्वैलरी	जयपुर
महिन्द्रा सेज	आई.टी. हैण्डीक्राफ्ट	जयपुर (कलवाड़ा)
सोमानी सेज	हार्डवेयर एण्ड सॉफ्टवेयर	खैरथल-तिजारा
RNB सेज	टैक्सटाईल	बीकानेर
वाटिका सेज (प्रस्तावित)	I.T	जयपुर

Springboard ACADEMY

III. औद्योगिक पार्क एवं कॉम्पलैक्स-

1. जापानी पार्क (जेट्रो) → (JETRO - Japan External Trade Organization)	1. नीमराना (कोटपुतली-बहरोड़) 2. घिलोट (कोटपुतली-बहरोड़)
2. कोरियन पार्क → (KOTRA - Korea Trade Investment Promotion Agency)	घिलोट (कोटपुतली-बहरोड़)
3. सिरेमिक जोन →	घिलोट
4. एग्रो फूड पार्क (राज्य सरकार) →	श्रीगंगानगर, जोधपुर, कोटा, अलवर
5. मेगा फूड पार्क (केन्द्र सरकार) →	रूपनगढ़ (अजमेर) प्रस्तावित - मथानिया (जोधपुर) पलाना (बीकानेर)
6. सूचना तकनीकी पार्क (I.T पार्क) →	जयपुर, कोटा, उदयपुर, जोधपुर
7. मसाला पार्क (Spice Park) →	1st - मथानिया, जोधपुर, 2nd - रामगंज मण्डी, कोटा
8. परिधान पार्क / अपैरल पार्क →	जगतपुरा (महल रोड), जयपुर
9. स्टोन पार्क →	मण्डोर (जोधपुर), मासलपुर (करौली), बिसनौदा (धौलपुर) मण्डाना (कोटा)
10. साफ्टवेयर पार्क →	कनकपुरा (जयपुर)
11. पुष्प पार्क →	खुशखेड़ा (खैरथल-तिजारा)
12. होजरी पार्क →	चौपंकी (खैरथल-तिजारा)

Springboard ACADEMY

13. निर्यात संवर्द्धन औद्योगिक पार्क →	सीतापुरा (जयपुर), बोरानाडा (जोधपुर), नीमराना (कोटपुतली-बहरोड़)

NOTE- देश का प्रथम निर्यात संवर्द्धन औद्योगिक पार्क - सीतापुरा, जयपुर (1997)

कॉम्पलैक्स-

1. ऊन कॉम्पलैक्स →	खारा (बीकानेर), ब्यावर, गोहना (ब्यावर) नरबदखेड़ा (ब्यावर)
2. सिरेमिक कॉम्पलैक्स →	खारा (बीकानेर)
3. लेदर कॉम्पलैक्स →	मानपुरा माचेड़ी (जयपुर-ग्रामीण)
4. पेट्रो कॉम्पलैक्स →	बालोतरा

IV. औद्योगिक निवेश कार्यक्रम-

1. रिसर्जेंट राजस्थान → (2008)
2. रिसर्जेंट राजस्थान → (Nov. 2015)
3. निवेश/इन्वेस्ट राजस्थान समिट → (7 Oct. 2022)
4. राईजिंग राजस्थान ग्लोबल इनवेस्टमेंट (2024) (9-10-11 दिसम्बर)

- उपरोक्त सभी कार्यक्रमों में सर्वाधिक निवेश 'ऊर्जा क्षेत्र' में हुआ है।
- राजस्थान राइजिंग के आँकड़े आना अभी बाकी है। (Update)

Springboard ACADEMY

नोट:- निवेश कार्यक्रम का आयोजन करवाने वाली नोडल एजेंसी- BIP (ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टमेंट प्रमोशन)

- गठन- 1991
- उद्देश्य- 10 करोड़ से अधिक के औद्योगिक निवेश

(V) दिल्ली मुम्बई-इंडस्ट्रीयल कॉरिडोर –

वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडॉर–

- 1504 कि.मी.
- दादरी (U.P) से JLN पोर्ट (मुम्बई)
- 38% (लम्बाई लगभग -570 कि.मी) राजस्थान से गुजरता है (कुल 6 राज्य व U.T से)
- सहायता - जापान
- उद्देश्य - औद्योगिक निर्यात को बढ़ावा देना।

DMIC के दोनों तरफ 150 कि.मी. की पट्टी को DMIC के रूप में विकसित किया जायेगा, जिसमें 24 औद्योगिक क्षेत्र एवं 8 औद्योगिक निवेश क्षेत्र बनाए जायेंगे, जिसमें से राजस्थान में—

निवेश क्षेत्र

(i) अजमेर - किशनगढ़

(ii) खुशखेड़ा - भिवाड़ी - नीमराना

28 Dec. 2020 को 'विशेष निवेश क्षेत्र' के रूप मे अधिसूचित

औद्योगिक क्षेत्र

(i) जयपुर - दौसा औद्योगिक क्षेत्र

(ii) राजसमंद - भीलवाड़ा औद्योगिक क्षे

(iii) जोधपुर - पाली - मारवाड़

(RIICO की जिम्मेदारी)

12 Oct 2020 को 'विशेष निवेश क्षेत्र' के रूप मे अधिसूचित

Springboard ACADEMY

राजस्थान में DMIC का प्रथम चरण-

(a) खुशखेड़ा - भिवाड़ी - नीमराना (165 कि.मी.²)

(b) जोधपुर - पाली - मारवाड़ (154 कि.मी.²)

↓

इनके विकास हेतु एक संयुक्त स्पेशल पर्पज व्हीकल कंपनी - "राजस्थान इंडस्ट्रीयल डवलपमेंट कॉरपोरेशन" (RIDCO) की स्थापना

- 15 मार्च, 2022

NOTE- प्रथम चरण में पूर्णतः राजकीय भूमि (Gov. Land) शामिल है।

VI. औद्योगिक संस्थान

RFC	RAJSICO	RIICO	RUDA
1955	3 जून, 1961	1969	1995
(जयपुर)	(जयपुर)	(जयपुर)	(जयपुर)

(a) RFC (Rajasthan financial Corporation / राज्य वित्त निगम-

स्थापना - जनवरी, 1955

मुख्यालय - जयपुर

उद्देश्य- अतिलघु, लघु एवं मध्यम उद्योगों को अल्पकालीन ऋण उपलब्ध करवाना। (ऋण राशि 2000-20 करोड़)

RFC की योजनाएँ-

(i) फ्लैक्सी ऋण योजना- इस योजना के तहत (MSME) अतिलघु, लघु व मध्यम उद्योगों को सस्ती दर पर ऋण उपलब्ध करवाना।

Springboard ACADEMY

(२) टॉप-अप योजना- अतिलघु उद्योगों को तकनीकी व मशीनरी विकास के लिए ऋण उपलब्ध करवाने की योजना।

(३) सैमफैक्स योजना / SEMFEX SCHEME-

(Self Employed for Ex-Serviceman Scheme)

- भूतपूर्व सैनिकों को उद्योग स्थापित करने के लिए सहयोग करने वाली योजना।

> नोट:- RFC के द्वारा विश्वसनीय ऋणियों को सिल्वर, गोल्ड, प्लेटिनम कार्ड जारी किया जाता है।

(b) राजसीको (RAJSICO- Rajasthan Small Industries Corporation Limited)

स्थापना- जून, 1961

मुख्यालय - जयपुर

→ उद्देश्य-
- आदिवासी क्षेत्रों में प्रशिक्षण उपलब्ध कराना।
- लघु उद्योगो को कच्चा माल, मशीनरी व तकनीकी सुविधा उपलब्ध करवाना।
- राजसीको लघु उद्योगो से उत्पादित माल के विपणन का कार्य करता है।

(c) रीको (Riico- Rajasthan State Industrial development and Investment Corporation Limited)

→ स्थापना- २8 मार्च, 1969 (पुनर्गठन -1 जनवरी 1980)

→ मुख्यालय- जयपुर

Springboard Academy

➡ उद्देश्य - • मध्यम एवं वृहद उद्योगों को मध्यकालीन ऋण उपलब्ध करवाना।
• उद्योगों के लिए भूमि उपलब्ध करवाना।

• सेज कार्यक्रम का संचालन

• राजस्थान में उद्योगों की यह शीर्ष संस्था है।

(d) रूडा (RUDA – Rural Non-farm/Agriculture development Agency

➡ स्थापना- 1995

➡ मुख्यालय- जयपुर

➡ उद्देश्य- गैर कृषि क्षेत्रों में विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित प्रशिक्षण उपलब्ध कराना।

➡ रूडा के प्रशिक्षण क्षेत्र- ऊन एवं वस्त्र उद्योग, चमड़ा उद्योग, लघु व गौण खनिज संबंधित होते है।

VII. औद्योगिक विकास योजनाएँ-

(a) एस्साईड योजना-

↳ औद्योगिक निर्यात को बढ़ावा देने के लिए शुरु की गई योजना।

↳ शुरुआत- मार्च, 2002

(b) मुख्यमंत्री स्वावलम्बन योजना-

शुरुआत- 2013

↳ उद्देश्य- इस योजना के तहत हस्त आधारित व दस्तकारों को स्वयं का उद्योग स्थापित करने के लिए 10 लाख रु तक ऋण उपलब्ध करवाना।

Springboard Academy

(c) मुख्यमंत्री युवा उद्यमिता योजना-

- शुरुआत- 1 अप्रैल, 2013 (आदेश मार्च 2023 के अनुसार 31 जुलाई 2025 तक लागू)
- उद्देश्य- जिन युवाओं के पास लीक से हटकर उद्योग स्थापित करने की योजना है, उन्हें आर्थिक सहयोग व ऋण उपलब्ध करवाना।
- योग्यता- • आयु- 18-35 वर्ष
  • 10 वीं + ITI या ग्रेजुएट
- ऋण राशि- 25 लाख - 1 करोड़ (ऋण लौटाने की अवधि 7 वर्ष)

(d) मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना-

- शुरुआत - 17 dec. 2019 (प्रभावी- 31 मार्च, 2025)
- योजना- लघु उद्योगों के ऋण पर ब्याज अनुदान संबंधित योजना।

	ऋण राशि	ब्याज अनुदान
1.	25 लाख	8 %
2.	25 लाख- 5 करोड़.	6 %
3.	5 करोड़ - 10 करोड़	5%

D. अन्य महत्वपूर्ण तथ्य-

(i) औद्योगिक विकास के लिए-
जिला स्तर पर - जिला उद्योग केन्द्र - 36
उपकेन्द्र - 8

(ii) सिंगल विण्डो क्लियरेंस एक्ट - 2011
↳ संशोधित 2020

(iii) ई- गवर्नेंस व IT नीति- नवम्बर 2015

Springboard ACADEMY

(iv) राज्य के विशेष औद्योगिक संस्थान-

- कम्प्यूटर एडेड कार्पेट (Carpet) डिज़ाइन सेंटर - जयपुर
- कम्प्यूटर एडेड टैक्सटाईल डिजाइन सेंटर - भीलवाड़ा
- ब्रह्मगुप्त अनुसंधान व विकास संस्थान - जोधपुर
- फुट वियर डिजाईन सेंटर - मंडोर (जोधपुर)
- NIFt (National Institute of fashion Technology)- जोधपुर
- सिरेमिक अनुसंधान व विकास केन्द्र - बीकानेर

(v) राजस्थान में निवेश प्रोत्साहन नीति-

- निवेश प्रोत्साहन नीति - २003
- राजस्थान उद्योग व निवेश प्रोत्साहन नीति - २010
- राजस्थान निवेश प्रोत्साहन नीति - २014
- राजस्थान निवेश प्रोत्साहन नीति - 17 dec. २019
- राजस्थान निवेश प्रोत्साहन नीति - 7 oct. २0२२

RIPS २0२२ के उद्देश्य-

- विनिर्माण और सेवा क्षेत्र में 15% वार्षिक वृद्धि।
- संतुलित और समावेशी क्षेत्रीय विकास।
- २027 तक 10 लाख रोजगार सृजित।
- पर्यावरण संरक्षण हेतु हरित हाइड्रोजन एवं वैकल्पिक ऊर्जा को प्रोत्साहन।

NOTE- राजस्थान में सर्वाधिक औद्योगिक निर्यात क्रमशः-

1st इंजीनियरिंग/अभियांत्रिकी २. जवाहरात व आभूषण 3. धातुएँ 4. कपड़ा

Springboard ACADEMY

ऊर्जा / Energy

- ✓ ऊर्जा का वर्गीकरण
- ✓ राजस्थान के प्रमुख ऊर्जा प्रोजेक्ट
- ✓ ऊर्जा संबंधी संस्थान
- ✓ ऊर्जा संबंधित योजनाएँ
- ✓ अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

A. ऊर्जा संसाधनों का वर्गीकरण

संभावना के आधार पर

नवीकरणीय

1. हाइड्रो/जल
2. सौर ऊर्जा
3. पवन ऊर्जा
4. बायो गैस
5. बायो मास
6. ज्वारीय ऊर्जा
7. भू-तापीय ऊर्जा

अनवीकरणीय

1. तापीय ऊर्जा
   - कोयला
   - प्राकृतिक गैस
   - पेट्रोलियम
2. परमाणु ऊर्जा
   - यूरेनियम
   - थोरियम

उपयोग / उत्पादन के आधार पर

परम्परागत

1. कोयला
2. प्राकृतिक गैस
3. पेट्रोलियम
4. हाइड्रो / जलीय ऊर्जा

गैर-परम्परागत

1. परमाणु ऊर्जा
2. सौर ऊर्जा
3. पवन ऊर्जा
4. बायो मास
5. बायो गैस
6. ज्वारीय ऊर्जा

(a) <u>परम्परागत उर्जा संसाधन</u> –

वे ऊर्जा संसाधन जिनका उपयोग लम्बे समय से किया जा रहा हो और जिनसे ऊर्जा पुरानी तकनीक से उत्पादित की जाती है।

उदाहरण- जल ऊर्जा, तापीय ऊर्जा (कोयला, गैस, पेट्रोलियम)

Springboard ACADEMY

(b.) <u>गैर-परम्परागत ऊर्जा स्त्रोत-</u>

वे ऊर्जा संसाधन जिनसे ऊर्जा नवीन/उन्नत तकनीक से उत्पादित की जाती है।

- उदा०- परमाणु ऊर्जा, पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा, बायोगैस ऊर्जा आदि।

NOTE :-

उत्पादन क्षमता के आधार पर ऊर्जा स्टेशन के प्रकार

- सुपर स्टेशन → 1000 MW से अधिक ऊर्जा उत्पादन वाला स्टेशन।
- सुपर क्रिटिकल स्टेशन → 500 MW से अधिक ऊर्जा उत्पादन वाली इकाई।
- अल्ट्रा मेगा पॉवर प्रोजेक्ट (UMPP) → 4000 MW से अधिक ऊर्जा उत्पादन वाला स्टेशन।

8. राजस्थान के प्रमुख ऊर्जा प्रोजेक्ट

राजस्थान में ऊर्जा परियोजनाएँ

- I. परम्परागत ऊर्जा
- II. गैर-परम्परागत ऊर्जा

I. परम्परागत ऊर्जा- जलीय ऊर्जा एवं तापीय ऊर्जा

जलीय ऊर्जा

- (a.) राज्य सरकार
- (b.) राज्य : राज्य
- (c.) केन्द्र सरकार

(a.) राज्य सरकार की जल ऊर्जा-

1. जाखम लघु जल ऊर्जा परियोजनाएँ - प्रतापगढ़.
   उत्पादन क्षमता- 5.4 मेगावाट

2. अनास जल विद्युत परियोजना- बांसवाड़ा
   उत्पादन क्षमता - 140 मेगावाट

3. इंदिरा गाँधी लघु जल विद्युत परियोजना - श्री गंगानगर, बीकानेर
   उत्पादन क्षमता- २3.85 मेगावाट

(b.) राज्य: राज्य सहयोग की जल विद्युत परियोजनाएँ-

- **भाखड़ा-नांगल जल विद्युत परियोजनाएँ-**
  - लाभान्वित राज्य - राजस्थान, पंजाब, हरियाणा
  - उत्पादन क्षमता - 1493 मेगावाट
  - राजस्थान की हिस्सेदारी - 15.२ प्रतिशत (२२7 Mw)

- **व्यास जल विद्युत परियोजना-**
  - राज्य- राजस्थान + पंजाब
  - राजस्थान का हिस्सा - ५२२ Mw

> प्रमुख बांध
> → पौंग बांध (H.P) - 59%
> → पंडोह बांध (H.P) - २0%

- **माही- बजाज सागर जल विद्युत परियोजना-**
  - लाभान्वित राज्य - राजस्थान और गुजरात (45:55)
  - यह परियोजना दो चरणों में निर्मित है।

प्रथम चरण (1986) → २ x २5 मेगावाट = 50 मेगावाट

द्वितीय चरण (1989) → २ X 45 मेगावाट = 90 मेगावाट

> NOTE:- इस परियोजना में उत्पादित 100% ऊर्जा राजस्थान के आदिवासी क्षेत्र में वितरित कि जाती है। (140 Mw)

- चम्बल जल विद्युत परियोजना-

राजस्थान और M.P की संयुक्त परियोजना
↳ दोनों राज्यों का योगदान (50 : 50)

इस परियोजना में तीन बांधों से कुल 386 मेगावाट जल विद्युत उत्पादन है-

I चरण - गाँधी सागर → 23 मेगावाट × 5 (115 मेगावाट)

II चरण - राणा प्रताप सागर → 43 मेगावाट × 4 (172 मेगावाट)

III चरण - जवाहर सागर → 33 मेगावाट × 3 (99 मेगावाट)

↳ कुल = 386 मेगावाट (राजस्थान - 193 MW : मध्यप्रदेश - 193 MW)

- राहुघाट परियोजना - करौली
  - ↳ चम्बल नदी पर स्थित परियोजना।
  - ↳ राजस्थान + मध्यप्रदेश की संयुक्त परियोजना (50 : 50)
  - ↳ उत्पादन क्षमता - 79 मेगावाट

(C) केन्द्र सरकार की जल विद्युत परियोजनाएँ-

- सलाल परियोजना - (जम्मू और कश्मीर)
  - ↳ चिनाब नदी पर
  - ↳ NHPC (राष्ट्रीय जल विद्युत निगम) द्वारा संचालित है।
  - ↳ जम्मू और कश्मीर, राजस्थान, U.P, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली H.P और चंडीगढ़ को इस परियोजना से लाभ मिलता है।

- दुलहस्ती परियोजना - (जम्मू और कश्मीर)
  - ↳ NHPC द्वारा संचालित है।

Springboard ACADEMY

- चिनाब नदी पर
- जम्मू और कश्मीर, राजस्थान, U.P, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तराखण्ड और चंडीगढ़ को इस परियोजना से लाभ मिलता है।

• उरी परियोजना (जम्मू और कश्मीर)

- झेलम नदी पर
- NHPC द्वारा संचालित है।
- जम्मू और कश्मीर, राजस्थान, U.P, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, H.P, उत्तराखण्ड और चंडीगढ़ को इस परियोजना से लाभ मिलता है।

• पार्वती परियोजना - (हिमाचल प्रदेश)

- पार्वती नदी पर।
- NHPC द्वारा संचालित है।

• चमेरा परियोजना - (हिमाचल प्रदेश)

- रावी नदी पर (NHPC द्वारा संचालित)

• नाथपा झाकरी परियोजना (हिमाचल प्रदेश)

- सतलज नदी पर (NHPC द्वारा संचालित)

• टिहरी परियोजना - (उत्तराखण्ड)

- यह परियोजना टिहरी जल विद्युत विकास निगम लिमिटेड द्वारा भागीरथी एवं भीलांगना नदी पर संचालित है।

• टनकपुर परियोजना - (उत्तराखण्ड)

- NHPC द्वारा शारदा (काली) नदी पर संचालित।

Springboard ACADEMY

- **धौलीगंगा परियोजना-(उत्तराखण्ड)**

↳ इस परियोजना NHPC द्वारा धौली गंगा नदी पर संचालित है।

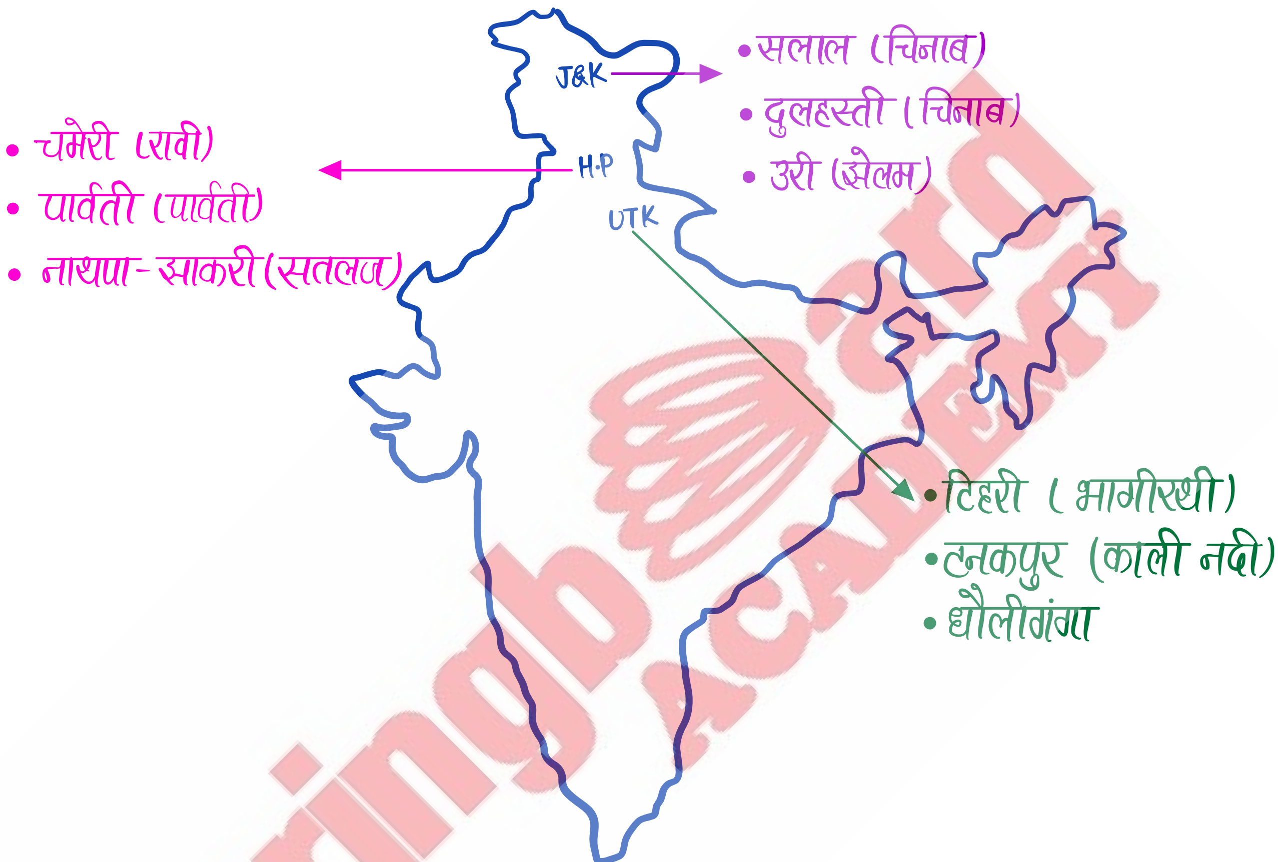

NOTE :- टिहरी (भागीरथी) THPC द्वारा संचालित है अन्य सभी परियोजनाएं NHPC द्वारा संचालित है।

निष्कर्ष- जल विद्युत परियोजनाओं में अधिक विकास एवं नियोजन की आवश्यकता है ताकि ऊर्जा उत्पादन को बढ़ाकर राजस्थान में ऊर्जा सुरक्षा को सुनिश्चित करना।

तापीय ऊर्जा- (राजस्थान राज्य की ताप विद्युत परियोजनाएँ-)

इस ऊर्जा का मुख्य स्त्रोत कोयला, पेट्रोलियम, एवं प्राकृतिक गैस है।

थर्मल/तापीय परियोजनाओं में विद्युत उत्पादन में कोयले का योगदान सर्वाधिक है।

A. कोयला/ लिग्नाइट आधारित परियोजनाएँ

- (a) राज्य सरकार की योजनाएँ
- (b) राज्य : राज्य की योजना
- (c) केन्द्र सरकार की योजना

(a) राज्य सरकार की योजनाएँ-

1. सूरतगढ़ सुपर क्रिटिकल थर्मल पावर प्लांट - श्री गंगानगर

सूरतगढ़ थर्मल प्लांट से पाँच चरणों में 8 इकाईयों से कुल २8२० MW ऊर्जा उत्पादित होती है।

जिसमें-

चरण	इकाईयाँ	उत्पादन क्षमता
I	Unit-1st	२50 MW
	Unit-२nd	२50 MW
II	Unit-3rd	२50 MW
	Unit-4th	२50 MW
III	Unit-5	२50 MW
IV	Unit-6	२50 MW
V	Unit-7	660 MW
	Unit-8	660 MW

यह राजस्थान का पहला सुपर थर्मल (२00२) पावर प्लांट है। जो वर्तमान (२0२5) में राजस्थान की सबसे बड़ी ताप विद्युत परियोजना है।

२. कोटा सुपर थर्मल पावर प्लांट -

- यह राजस्थान का पहला (1983) थर्मल (कोयला) पावर प्लांट है।
- राजस्थान की प्रथम ताप विद्युत परियोजना है जबकि दूसरी सुपर ताप विद्युत परियोजना है।

Springboard Academy

- कोटा थर्मल प्लांट से पाँच चरणों में 7 इकाईयों से कुल 1240 MW ऊर्जा उत्पादित होती है।

जिसमें-

चरण	इकाईयाँ	उत्पादन क्षमता
I	Unit-1st	110 MW
	Unit-2nd	110 MW
II	Unit-3rd	210 MW
	Unit-4th	210 MW
III	Unit-5	210 MW
IV	Unit-6	195 MW
V	Unit-7	195 MW

३. छबड़ा सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट- बारां

उत्पादन क्षमता – 2320 मेगावाट

यह राजस्थान की प्रथम क्रिटिकल ताप विद्युत परियोजना है।

चरण	इकाईयाँ	उत्पादन क्षमता
I	Unit-1st	250 MW
	Unit-2nd	250 MW
II	Unit-3rd	250 MW
	Unit-4th	250 MW
III	Unit-5	660 MW
	Unit-6	660 MW

४. कवाई सुपर क्रिटिकल पावर प्लांट- बारां

- उत्पादन क्षमता - 1320 मेगावाट
- सहयोग - अडानी ग्रुप

चरण	इकाईयाँ	उत्पादन क्षमता
I	Unit-1st	660 MW
	Unit-2nd	660 MW

Springboard ACADEMY

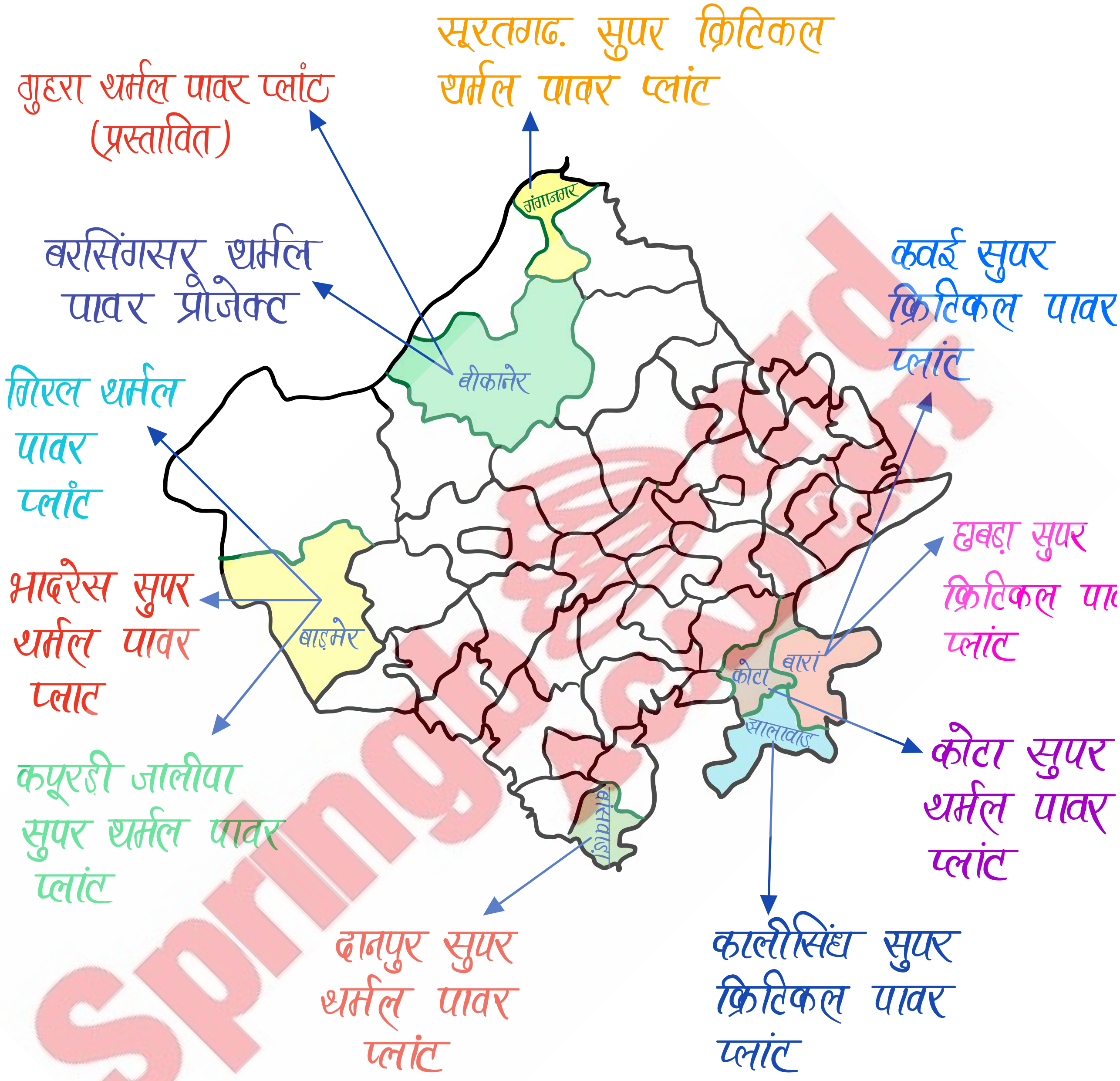

5. <u>काली सिंध क्रिटिकल पावर प्लांट-</u> झालावाड़

उत्पादन क्षमता- 1200 मेगावाट

प्रस्तावित - 800 मेगावाट (अल्ट्रा पॉवर प्रोजेक्ट)

6. <u>भादरेस सुपर पावर प्लांट-</u> बाड़मेर

➤ उत्पादन क्षमता - 1080 मेगावाट

7. कपूरड़ी - जालीपा सुपर थर्मल पावर प्लांट - बाड़मेर

- उत्पादन क्षमता - 1080 मेगावाट

8. गिरल थर्मल पावर प्लांट - थुम्बली गाँव, बाड़मेर

- उत्पादन क्षमता - 250 MW
- सहयोग - जर्मनी

9. छाबड़ा सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट - बांसवाड़ा

- उत्पादन क्षमता = 1600 मेगावाट

10. बरसिंगसर थर्मल पावर प्रोजेक्ट - बीकानेर

- उत्पादन क्षमता = 250 MW (125 MW × 2 Unit)
- यह नेवेली लिग्नाइट कॉर्पोरेशन (भारत सरकार) द्वारा संचालित है।

11. गुढ़ा थर्मल पावर प्लांट (प्रस्तावित) - बीकानेर

(b) राज्य : राज्य की योजना -

1. सतपुड़ा तापीय विद्युत परियोजना -

- स्थिति - जिला बैतूल, मध्यप्रदेश
- लाभान्वित राज्य = राजस्थान + मध्यप्रदेश

Springboard ACADEMY

(c) केन्द्र सरकार की परियोजना-

योजना	स्थान	रन-बाय
✓ सिंगरोली थर्मल प्लांट	U.P	NTPC
✓ रिहंद सुपर थर्मल पावर प्लांट	U.P	NTPC
✓ ऊंचाहार सुपर थर्मल पावर प्लांट	U.P	NTPC
✓ कहल गांव सुपर थर्मल पावर प्लांट	बिहार	NTPC
✓ तलचर सुपर थर्मल पावर प्लांट	ओडिशा	NTPC

गैस विद्युत परियोजना

- (a) राज्य सरकार की परियोजनाएँ
- (b) केन्द्र सरकार की परियोजनाएँ

a. राज्य सरकार की परियोजनाएँ-

गैस विद्युत परियोजना	स्थिति	उत्पादन क्षमता
1. रामगढ़ (1996)	जैसलमेर	२70.5 MW
२. कम्बाईंड साईकिल	धौलपुर	330 MW
3. झामर-कोटड़ा	उदयपुर	—

NOTE :- राज्य सरकार की प्रथम गैस विद्युत परियोजना- रामगढ़ (1996) है।

Springboard Academy

(b) केन्द्र सरकार (NTPC) की गैस विद्युत परियोजनाएँ -

1. अंता
2. दादरी
3. औरैया

गैस विद्युत परियोजना	स्थिति	उत्पादन क्षमता
1. अंता (१९८९) (HBJ हजीरा, बिजापुर, जगदीशपुर गैस पाइप लाइन)	बारां	419.3 MW
२. दादरी	U.P	८२९.78 MW
3. औरैया	U.P	65२ MW

NOTE - • राजस्थान में प्रथम (1989) गैस विद्युत परियोजना जो NTPC (केन्द्र सरकार) द्वारा संचालित → अंता गैस पावर प्लांट

नेप्था / तरल ईंधन आधारित परियोजनाएँ -

1. धौलपुर पावर प्लांट -
   - 1st चरण = 330 मेगावाट
   - IInd चरण = 372.7 मेगावाट
   - कुल = 702.7 मेगावाट

२. केशोरायपाटन थर्मल पावर प्लांट - बूँदी

B. गैर परम्परागत ऊर्जा

1. परमाणु ऊर्जा - (स्रोत - यूरेनियम व थोरियम)

- राजस्थान परमाणु या आण्विक ऊर्जा स्टेशन - रावतभाटा (चित्तौड़)
- शुरुआत - दिसम्बर, 1973 (सहयोग - कनाडा)
- संचालन - नाभिकीय ऊर्जा निगम (NPCIL)

Springboard Academy

- इस संयत्र की 6 इकाइयों की स्थापित कुल क्षमता 1180 मेगावाट है।

इकाई	उत्पादन
• प्रथम इकाई • द्वितीय इकाई • तृतीय इकाई • चतुर्थ इकाई • पंचम इकाई • छठी इकाई	100 मेगावाट २00 मेगावाट २२0 मेगावाट २२0 मेगावाट २२0 मेगावाट २२0 मेगावाट
कुल क्षमता	1180 मेगावाट − 100 MW (Ist Unit) = 1080 मेगावाट

NOTE – वर्तमान में प्रथम इकाई को पूर्णतः बंद कर दिया गया है।

- रावतभाटा परमाणु विद्युत गृह में 700 MW की दो यूनिट प्रस्तावित है। जिसमें प्रथम यूनिट (700 MW) सितम्बर २०२५ में स्थापित की गई।

- राजस्थान को रावतभाटा (राजस्थान) व नरौरा (उ.प्र.) से परमाणु ऊर्जा प्राप्त होती है।

- राजस्थान में दूसरा परमाणु ऊर्जा विद्युत गृह- बाँसवाड़ा (प्रस्तावित)
  700 MW x 4 यूनिट = २800 MW

२. सौर ऊर्जा-

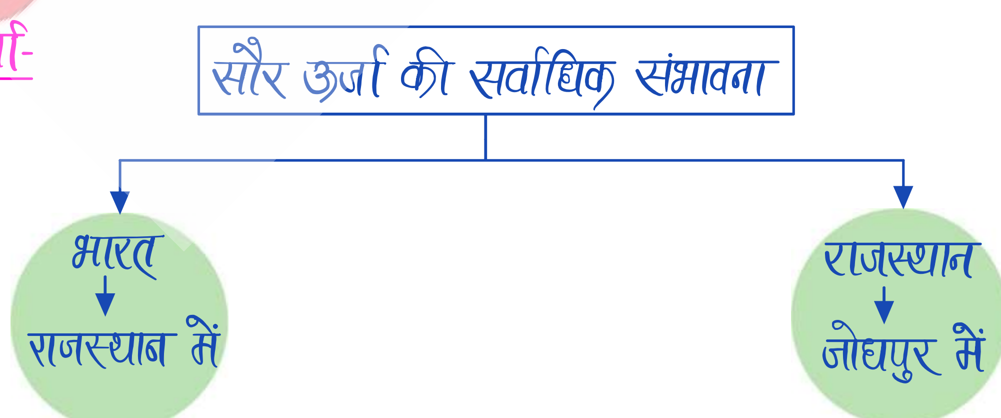

Springboard Academy

राजस्थान में सौर ऊर्जा की सर्वाधिक सम्भावना के कारण निम्नलिखित है—

- सौर विकिरण की तीव्रता अधिक होना।
- राज्य में एक वर्ष में लगभग 325 स्पष्ट धूप के दिन होते है।
- निवेशक सौर ऊर्जा परियोजनाओं में अधिक निवेश करते है।
- मरुस्थलीय विस्तार अधिक होने के कारण उच्च तापमान की प्राप्ति।

NOTE- राजस्थान में नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के आंकलन के अनुसार सौर स्रोतों से 142 गीगावाट (1,42,000 मेगावाट) सौर ऊर्जा प्राप्त करने की क्षमता है।

राजस्थान में सौर ऊर्जा विकास के लिए किये जा रहे प्रयास—

1. सोलर पार्क निर्माण योजना-

- इस योजना हेतु राजस्थान के जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर को चुना गया है।
- 2010 में क्लिंटन फाउंडेशन और राज्य सरकार के मध्य समझौते के तहत क्लिंटन फाउंडेशन सौर पार्क के विकास हेतु आवश्यक सहायता प्रदान करेगा।

राजस्थान में स्थापित सोलर पार्क

- भड़ला (जोधपुर)
- नादिया कला (जोधपुर)
- धूड़सर (जैसलमेर)
- पोकरण सौलर पार्क (जैसलमेर)
- फलौदी-पोकरण सोलर पार्क (जोधपुर-जैसलमेर)
- फतेहगढ़ सोलर पार्क (जैसलमेर)
- नोख सोलर पार्क (जैसलमेर)
- पूगल सोलर पार्क (बीकानेर)

Spring Board Academy

भड़ला सौलर पार्क-

- स्थित - जोधपुर में
- भड़ला में 2245 मेगावाट का सोलर पार्क चार चरणों में विकसित किया गया है।
- भड़ला सौलर पार्क फेज —

चरण	उत्पादन	सहयोग
Ist	65 मेगावाट	राजस्थान सोलर पार्क डवलपमेंट कंपनी लिमिटेड
IInd	680 मेगावाट	राजस्थान सोलर पार्क डवलपमेंट कंपनी लिमिटेड
IIIrd	1000 मेगावाट	IL & FS + राज्य सरकार
IVth	500 मेगावाट	मेसर्स अडानी + राज्य सरकार

* राजस्थान की पहली निजी क्षेत्र की सौर परियोजना रिलायंस द्वारा खींवसर (नागौर) में शुरू की गई

2. सोलर सिटी का निर्माण-

- जिन शहरों में सौर ऊर्जा की क्षमता सर्वाधिक है, उन्हें सोलर सिटी के रूप में विकसित किया जायेगा।
- इसमें जयपुर, जोधपुर व अजमेर को शामिल किया जायेगा
- प्रस्तावित जिले - पुष्कर (अजमेर), जैसलमेर

3. SEEZ— (Solar Energy Enterprises Zone/सौर ऊर्जा उपक्रम जॉन)

- राजस्थान में सर्वाधिक सौर ऊर्जा की सम्भावना वाला क्षेत्र SEEZ कहलाता है।
- इसमें सम्मिलित क्षेत्र- जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर है।

Springboard Academy

4. सौर ऊर्जा मिशन-

सौर ऊर्जा के विकास के लिए देश में जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय सोलर मिशन शुरू किया गया था।

- शुरुआत- जनवरी, २०10 से
- लक्ष्य= २०२२ तक 1 लाख मेगावाट (100 गीगावाट) सौर ऊर्जा उत्पादन
- यह मिशन तीन चरणों में चलाया जायेगा,

तीन चरण
- प्रथम चरण (२010-13)
- द्वितीय चरण (२013-17)
- तृतीय चरण (२017-२२)

6. सौर ऊर्जा नीति-

राजस्थान में
- प्रथम सौर ऊर्जा नीति - २011
- द्वितीय सौर ऊर्जा नीति - २015
- नवीनतम सौर ऊर्जा नीति - 18 dec. २019

सौर ऊर्जा नीति
- सौर ऊर्जा नीति
- लक्ष्य
- दृष्टि एवं उद्देश्य
- नोडल एजेंसी

★ सौर ऊर्जा नीति-

- इस नीति को सौर ऊर्जा नीति २019 के नाम से जाना जाता है।
- लागू → 18 dec २019

Springboard ACADEMY

↳ लक्ष्य → 1. २०२४-२५ तक ३०,००० मेगावाट सौर ऊर्जा परियोजनाओं का लक्ष्य हासिल करना।

2. सौर ऊर्जा के उत्पादन क्षेत्र में भावी निवेशकों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना।

3. राष्ट्रीय स्तर पर ऊर्जा सुरक्षा प्राप्त करना।

4. जलवायु परिवर्तन की चुनौतियाँ का सामना करने जैसे लक्ष्यों को पूरा करना।

(i) सोलर पार्क → 24,000 MW

(ii) डिस्कॉम → 4000 MW

(iii) सोलर रूफटॉप → 1000 MW

(iv) सोलर पम्प → 1000 MW

3. <u>पवन ऊर्जा</u>- नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ विण्ड एनर्जी द्वारा 150 मी. ऊँचाई पर किए गये अध्ययन के अनुसार, राजस्थान में पवन ऊर्जा की उत्पादन क्षमता लगभग = २८४ गीगावाट है।

नोट:- राजस्थान में जैसलमेर में पवन ऊर्जा की सम्भावना सर्वाधिक है।

मुख्य पवन ऊर्जा संयंत्र –

- अमर सागर → जैसलमेर (राजस्थान में 1st)
- सोढा बाँधन → जैसलमेर
- पोहरा → जैसलमेर
- आकल → जैसलमेर
- हंसुआ → जैसलमेर

Springboard ACADEMY

- देवगढ़ → प्रतापगढ़ (राजस्थान में 2nd)
- बीठड़ी → फलौदी (राजस्थान में 3rd)
- हर्ष विंड एनर्जी → सीकर
- बड़ा बाग → जैसलमेर
- हाईब्रिड विंड एनर्जी प्लांट → जैसलमेर

नोट :-

1. मेसर्स कालानी इंडस्ट्रीज, ने बड़ा बाग (जैसलमेर) में निजी क्षेत्र की प्रथम पवन ऊर्जा परियोजना की स्थापना की है।

राजस्थान में

- सबसे बड़ा विंड एनर्जी पार्क → "बड़ा बाग" (जैसलमेर)
- रेलवे का पहला पवन ऊर्जा संयंत्र → कोडियासर (जैसलमेर)
- पवन ऊर्जा में सर्वाधिक योगदान → सुजलॉन एनर्जी

पवन ऊर्जा नीति

- पवन ऊर्जा नीति
- लक्ष्य
- दृष्टि एवं उद्देश्य
- नोडल एजेंसी

पवन ऊर्जा-

इस नीति को राजस्थान पवन एवं हाईब्रिड ऊर्जा नीति - 2019 के नाम से जाना जायेगा।

- लागू → 18 dec. 2019 को।
- लक्ष्य → 2024-25 तक 3500 मेगावाट पवन एवं हाइब्रिड ऊर्जा परियोजनाओं का लक्ष्य हासिल करना है।

Springboard ACADEMY

1. Hybridization of existing Wind/Solar plants → 200MW
2. New Wind-Solar Hybrid project → 2000MW
3. Wind-Solar Hybrid With Storage System → 500MW
4. Hybridization of existing Conventional Plants → 800MW

- दृष्टि एवं उद्देश्य-

→ पवन ऊर्जा परियोजनाओं और आवश्यक भण्डारण प्रणालियों को बढ़ावा देना।

→ पवन ऊर्जा परियोजनाओं को बढ़ावा देना।

→ अक्षय ऊर्जा एकीकरण के लिए राज्य में ट्रांसमिशन एवं वितरण नेटवर्क को मजबूत करना।

→ पवन संसाधन आंकलन को बढ़ावा देना।

→ पवन ऊर्जा उपकरणों के निर्माण सम्बन्धित उद्योगों को बढ़ावा देना।

→ भूमि संसाधनों और पारेषण प्रणालियों के उच्चतम उपयोग के साथ ग्रिड सुरक्षा और स्थिरता की चुनौतियों का सामना करने के लिए पवन और सौर प्रौद्योगिकियों का हाइब्रिडाइजेशन।

सौर ऊर्जा व पवन ऊर्जा के लिए राजस्थान रिन्यूबल एनर्जी कॉरपोरेशन नोडल एजेंसी के रूप में निम्नलिखित कार्य करेगा-

→ परियोजनाओं का पंजीकरण

→ परियोजनाओं की स्वीकृति

→ पवन पार्कों/ सौर पार्कों का विकास

→ सरकारी भूमि के आवंटन की सुविधा।

Springboard Academy

4. बायोमास ऊर्जा-

- राजस्थान में बायोमास ऊर्जा के मुख्य स्रोत सरसों का तेल, विलायती बबूल, चावल की भूसी है।

- बायोमास ऊर्जा की सर्वाधिक सम्भावनाएँ श्री गंगानगर जिले में है।

प्रमुख बायोमास उर्जा संयंत्र :-

बायोमास संयंत्र	स्थान
पदमपुर →	श्री गंगानगर
खातोली →	उनियारा (टोंक)
रंगपुर →	कोटा
चंदेरिया →	चित्तौड़गढ़
संगरिया →	हनुमानगढ़
कचेला - बागसरी →	सांचौर

* राजस्थान में प्रथम बायोमास एनर्जी प्लांट - पदमपुर (श्री गंगानगर)

5. बायो गैस ऊर्जा-

- स्रोत - गाय का गोबर
- सर्वाधिक सम्भावना = उदयपुर में

बायोगैस का रासायनिक संगठन-

मिथेन = 65 %
CO_2 = 30 %
हाइड्रोजन = 5 %

Springboard ACADEMY

C. ऊर्जा संबंधित संस्थान-

1. राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम- (RREC)

- उद्देश्य- राज्य में गैर-परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों का विकास और संरक्षण करना।
- स्थापना- 9 Aug. 2002
- राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम की स्थापना REDA + RSPCL को मिलाकर की गई है।

REDA →	Rajasthan Energy Development Agency : 1985
RSPCL →	Rajasthan State Power Corporation Ltd: 1995

NOTE :- RSDCL → Rajasthan Solarpark Development Company

- स्थापना- 2 Nov. 2011 (जयपुर)
- यह राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम की सहयोगी कम्पनी है।

2. राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम - जयपुर
3. राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम- जयपुर
4. राजस्थान राज्य विद्युत वितरण निगम - जयपुर
5. राजस्थान राज्य विद्युत वितरण निगम - अजमेर
6. राजस्थान राज्य विद्युत वितरण निगम - जोधपुर

Springboard Academy

7. ऊर्जा संबंधित प्रमुख योजनाएँ

1. उज्ज्वल डिस्कॉम एश्योरेंस योजना- (उदय योजना)

- शुरुआत = 5 नवम्बर, 2015 (भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय द्वारा)
- इस योजना के तहत भारत सरकार ने 27 जनवरी 2016 को राज्य सरकार और प्रत्येक डिस्कॉम के साथ त्रिकोणीय MoU पर हस्ताक्षर किए।
- इस योजना का मुख्य उद्देश्य विभिन्न कम्पनियों (डिस्कॉम) की वित्तीय स्थिति को सुधारना।

2. सौभाग्य योजना (PM सहज हर घर बिजली योजना) — 25 Sep. 2017

- उद्देश्य - देश के हर घर में बिजली पहुँचाना। (लक्ष्य वर्ष - 31 मार्च, 2019)

3. कुसुम योजना (KUSUM - किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान योजना)

प्रारम्भ - 8 मार्च, 2019

लक्ष्य ऊर्जा - 30800 मेगावाट

उद्देश्य - (i) सौलर पंपों को स्थापित कर ग्रिड से जोड़ना।
(ii) किसानों को ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करना।

(a) कुसुम घटक - ए —

- स्थापना - 0.5 MW से 2 MW क्षमता तक के विकेन्द्रीकृत सौर ऊर्जा संयंत्र
- स्थान - 33/11 किलोवाट सबस्टेशनों के 5 किमी. की परिधि में स्थित किसानों की बंजर भूमि पर
- संचालन - राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम

Springboard ACADEMY

(b.) कुसुम घटक - बी :- 7.5 H.P. तक की क्षमता वाले कृषि पम्प सेटों को सौर ऊर्जाकृत हेतु 12,500 पम्प सेटो का लक्ष्य रखा गया है।

(c.) कुसुम घटक - सी :- (फीडर लेबल सोलराइजेशन)

↳ लक्ष्य- 2,00,000 पम्प सेटो का सॉलराइजेशन

↳ किसान/भूमि मालिकों और डवलपर्स के सहयोग और आवश्यक भूमि की व्यवस्था करने के लिए सौर कृषि आजीविका योजना (Skay) पोर्टल (www.skayrajasthan.org.in)

4. मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना-

- शुरुआत- 17 जुलाई, 2021

- उद्देश्य- कृषि उपभोक्ता को 1000 ₹/ माह, 1-वर्ष में अधिकतम 12000 ₹ का अनुदान।

- जून, 2023 से इसे मुख्यमंत्री निः शुल्क बिजली योजना (कृषि अनुदान) में मिला दिया गया है।
  जिसके तहत वर्तमान में (कृषि उपभोक्ताओं को)
  - → 2000 यूनिट प्रतिमाह मुफ्त बिजली
  - → 2000 यूनिट प्रतिमाह से अधिक होने पर मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना के तहत उस माह विशेष में 1000 ₹ सब्सिडी

5. मुख्यमंत्री निः शुल्क बिजली योजना (घरेलू अनुदान)-

लाभ प्रारम्भ- June, 2023

विद्युत उपभोग	रियायत
• 100 यूनिट तक	मुफ्त बिजली
• 200 यूनिट तक	पहले 100 यूनिट के विद्युत शुल्क, फिक्स चार्ज और नगरीय उपकर के बिल में छूट
• 200 यूनिट से अधिक	पहली 100 यूनिट मुफ्त लेकिन अन्य शुल्क उपभोक्ता को वहन करने होंगे।

Springboard ACADEMY

6. PM सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना-

- शुरुआत- 13 फरवरी २०२4
- बजट - 75,000 करोड़ ₹
- उद्देश्य -(i) हर महीने 300 युनिट मुफ्त बिजली उपलब्ध करवाने के लिए एक करोड़ घरों पर सौर संयंत्र स्थापित करना।

  (ii) इस योजना में अनुदान -

1 से २ KW	₹ 30,000 से 60,000
3 KW	78,000 (अधिकतम)

लक्ष्य-राजस्थान सरकार ने 5 लाख घरों में सोलर रूफटॉप संयंत्र लगाने का लक्ष्य रखा है।

E. अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

1. राजस्थान में ऊर्जा सम्बन्धित नीतियाँ-

सौर ऊर्जा नीतियाँ
- 1st - २011
- २nd - २014
- 3rd - 18 dec. २019

पवन ऊर्जा नीतियाँ
- २01२
- 18 dec. २019

अक्षय ऊर्जा नीतियाँ
- 6 अक्टूबर, २0२3

अक्षय ऊर्जा नीति का २0२9-30 तक ऊर्जा लक्ष्य-
- सौर = 65,000 MW
- विंड & हाइब्रिड = 15,000 MW
- हाइड्रो/जल, पम्प स्टोरेज प्लांट = 10,000 MW

कुल लक्ष्य = 90,000 MW

बायोमास नीतियाँ
- २010
- २0२3 → बायोमास वेस्ट टू एनर्जी नीति, २0२3 (२9 सितम्बर, २0२3)

राजस्थान ग्रीन हाइड्रोजन नीति
- २9 सितम्बर, २0२

Springboard Academy

राजस्थान ग्रीन हाइड्रोजन नीति

- २१ सितम्बर, २०२३
- ३१ मार्च, २०३० तक / नई नीति तक
- २०३० तक राज्य में २००० KTPA का लक्ष्य (KTPA = Kilo tones Per Annum)

Note :- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार २०३० तक 500 GW नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन के लक्ष्य के लिए प्रतिबद्ध है।

२. राजस्थान में वर्तमान में ऊर्जा—

अधिष्ठापित क्षमता (Installed capacity) – २५783.64 MW (मार्च, २०२५)

जिसमें मुख्य उत्पादन—
- तापीय ऊर्जा = 12,000 MW (लगभग) -(60-70%)
- पवन ऊर्जा = 5359.63 (50-60%)
- सौर ऊर्जा = 5010.50 MW
- हाइड्रो / जलीय ऊर्जा = 3,000 MW (लगभग)
- परमाणु ऊर्जा = 556.75 MW
- बायोमास ऊर्जा = 109.95 MW

राजस्थान में मार्च, २०२५ तक कुल विद्युतीकरण गाँव = 53,965

राजस्थान की कुल स्थापित विद्युत क्षमता में—
- परम्परागत ऊर्जा योगदान 78–79 %
- अक्षय / नवीकरणीय ऊर्जा योगदान २१ – २२%

NOTE:- नवीकरणीय (अक्षय) ऊर्जा में सर्वाधिक वार्षिक वृद्धि २०२३ में- राजस्थान (प्रथम)

3. ऊर्जा संबंधित महत्वपूर्ण दिवस-

- २० अगस्त → अक्षय ऊर्जा दिवस
- 14 दिसम्बर → राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस
- अर्थ आवर डे →
  - यह मार्च के किसी भी शनिवार को सायः 8:30-9:30 तक मनाया जाता है।
  - इस दिन आवश्यक उपकरण को छोड़कर अन्य सभी उपकरण बन्द करने की अपील की जाती है।
  - यह पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा की बचत का सन्देश देने के लिए ऑस्ट्रेलिया से शुरू किया गया था जिसमें भारत २००१ में शामिल हुआ।

Springboard ACADEMY

जनसंख्या

जनगणना का इतिहास-

- ✓ प्राचीन काल → अर्थशास्त्र = चाणक्य (मौर्य काल)
- ✓ मध्य काल → "आइने-अकबरी" = अबुल फज़ल (मुगल काल)
- ✓ आधुनिक काल → 1872 ई. लॉर्ड मेयो द्वारा आधुनिक जनगणना की शुरुआत।

NOTE:-

- 1981 में लॉर्ड रिपन के काल में व्यवस्थित और दशकीय जनगणना की शुरुआत हुई।
- जनगणना संघ सूची का विषय है।
- जनगणना संविधान की सातवीं अनुसूची में शामिल है।
- जनसंख्या जनगणना अधिनियम - 1948 में पारित।
- राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग - 11 मई, 2000
- जनगणना गृह मंत्रालय के जनगणना विभाग द्वारा करवाई जाती है।

जनगणना - 2011

- क्रमानुसार → 15th
- दशकीय/व्यवस्थित → 14th
- स्वतंत्रता के बाद → 7th
- 21वीं शताब्दी → 2nd

➥ 15वीं जनगणना बजट - 2200 करोड़

Springboard ACADEMY

- प्रति व्यक्ति लागत - 18.19 ₹
- २०11 की जनगणना में शामिल कुल जिले - 640 (राजस्थान - 33 जिले)
- जनगणना शुभंकर - प्रगणक शिक्षिका
- जनगणना आदर्श वाक्य - "हमारी जनगणना, हमारा भविष्य"

विशेष बिन्दु-

- राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर पहली बार बनाया गया है।
- प्रथम बार घरों की गणना
- किन्नरों को इस जनगणना में पहली बार शामिल किया गया।
- प्रथम पेपरलेस जनगणना।
- जातीय जनगणना दूसरी बार २०11 में की गई। (प्रथम बार- 1931)

२०11 की जनगणना दो चरणों में सम्पन्न हुई-

- पहला चरण- 15 मई से 30 जून, २010
- दूसरा चरण - 9 फरवरी - २8 फरवरी, २011

1. कुल जनसंख्या-

भारत की कुल जनसंख्या - 121.085 करोड़

राजस्थान की कुल जनसंख्या - 6.85 करोड़

(पुरुष-51.86% एवं महिलाएँ-48.14%)

(अधिकतम)
- जयपुर - 66.26 लाख
- जोधपुर - 36.87 लाख

(न्यूनतम)
- जैसलमेर - 6.69 लाख
- प्रतापगढ़ - 8.67 लाख

Springboard ACADEMY

अलवर - 36.75 लाख	सिरोही - 10.36 लाख
नागौर - 33.07 लाख	बूँदी - 11.10 लाख
उदयपुर - 30.68 लाख	राजसमंद - 11.56 लाख

- राजस्थान में भारत की कुल जनसंख्या का 5.67 प्रतिशत और विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 1% हिस्सा है।
- 2011 के अनुसार, जनसंख्या की दृष्टि से 8 वां स्थान रखता है जबकि वर्तमान में भारत में 7 वां स्थान (आन्ध्रप्रदेश के विभाजन के कारण) रखता है।
- शिशु जनसंख्या (0-6 वर्ष) → राजस्थान की कुल जनसंख्या का 15.54 % है।

2. कुल जनसंख्या वृद्धि दर-

किसी निश्चित स्थान पर निश्चित समय में (10 वर्ष) प्रति 100 व्यक्तियों पर होने वाली वृद्धि, 'जनसंख्या वृद्धि दर' कहलाती है।

जनसंख्या वृद्धि दर

सर्वाधिक		न्यूनतम	
1. बाड़मेर	32.5 प्रतिशत	1. श्री गंगानगर	10 प्रतिशत
2. जैसलमेर	31.8 प्रतिशत	2. झुंझुनूं	11.7 प्रतिशत
3. जोधपुर	27.7 प्रतिशत	3. पाली	11.9 प्रतिशत
4. बांसवाड़ा	26.58 प्रतिशत	4. बून्दी	15.4 प्रतिशत

Springboard ACADEMY

ग्रामीण (19%) व नगरीय (29%) जनसंख्या वृद्धि दर

सर्वाधिक

ग्रामीण
1. जैसलमेर
2. बाड़मेर
3. बांसवाड़ा

नगरीय
1. अलवर
2. दौसा
3. बारां

न्यूनतम

ग्रामीण
1. कोटा
2. श्री गंगानगर
3. झुंझुनूं

नगरीय
1. डूंगरपुर
2. प्रतापगढ़
3. हनुमानगढ़

- राजस्थान में सर्वाधिक ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि दर 1911-21 (-6.29%) के दशक में रही।

  इसे "जनसंख्या विभाजक दशक" भी कहते है।

★ राजस्थान में 1911-21, के दशक में जनसंख्या घटने के कारण-

1. प्लेग महामारी (मुख्य कारण)
2. प्रथम विश्व युद्ध
3. राष्ट्रीय आन्दोलनों की शुरुआत

- राजस्थान में 1951 से 1981 के दशकों को 'जनसंख्या विस्फोटक दशक' कहा जाता है। जिसमें— राजस्थान की जनसंख्या की सर्वाधिक वृद्धि दर- 1971-81 (32.97%) बढी।

- 1991-2001 में राजस्थान की जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि दर्ज की गई।

- जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख कारक- उच्च जन्म दर, न्यूनतम मृत्यु दर एवं आप्रवास।

Springboard ACADEMY

3. जनसंख्या घनत्व- प्रति वर्ग कि.मी. में रहने वाली जनसंख्या।

↳ 2001 में राजस्थान का जनघनत्व 165 था.

जबकि 2011 में → जनसंख्या घनत्व - 200/वर्ग कि.मी.

सर्वाधिक

1. जयपुर - 595
2. भरतपुर - 503
3. दौसा - 476
4. अलवर - 438

न्यूनतम

1. जैसलमेर - 17
2. बीकानेर - 78
3. बाड़मेर - 92
4. चुरु - 147

100 से कम जनसंख्या घनत्व वाले जिले - जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर

* मरुस्थलीय जिलों (पश्चिमी राजस्थान) में जनसंख्या घनत्व सबसे कम मिलता है।

4. लिंगानुपात- प्रति हजार पुरुषों की संख्या पर महिलाओं की संख्या को लिंगानुपात कहा जाता है।

कुल औसत लिंगानुपात = 928

सर्वाधिक

डूंगरपुर - 994
राजसमंद - 990
पाली - 987
प्रतापगढ़ - 983

न्यूनतम

धौलपुर - 846
जैसलमेर - 852
करौली - 861
भरतपुर - 880

2001 (921) की तुलना में 2011 (928) में 7 अंकों की बढ़ोतरी हुई।

Springboard ACADEMY

राज्य में लिंगानुपात

- **ग्रामीण - 933**
  - **सर्वाधिक**
    1. पाली - 1003
    2. राजसमंद - 998
    3. डूँगरपुर - 996
  - **न्यूनतम**
    1. धौलपुर - 851
    2. करौली - 856
    3. जैसलमेर - 859
- **शहरी - 914**
  - **सर्वाधिक**
    1. टोंक - 985
    2. बांसवाड़ा - 964
    3. प्रतापगढ़ - 963
  - **न्यूनतम**
    1. जैसलमेर - 807
    2. धौलपुर - 864
    3. अलवर - 872

2011 में शिशु लिंगानुपात - 888

- **सर्वाधिक**
  - बांसवाड़ा - 934
  - प्रतापगढ़ - 933
  - भीलवाड़ा - 928
  - उदयपुर - 924
- **न्यूनतम**
  - झुंझुनूं - 837
  - सीकर - 848
  - करौली - 852
  - श्री गंगानगर - 854

NOTE- राजस्थान में 2001 में शिशु लिंगानुपात 909 था जिसमें 2011 में (909-888) 21 अंकों की कमी हुई।

राज्य में शिशु लिंगानुपात

- **ग्रामीण - 892**
  - **सर्वाधिक**
    1. बाँसवाड़ा - 937
    2. प्रतापगढ़ - 936
    3. भीलवाड़ा - 933
  - **न्यूनतम**
    1. झुंझुनूं - 832
    2. सीकर - 843
    3. करौली - 850
- **शहरी - 874**
  - **सर्वाधिक**
    1. नागौर - 907
    2. बीकानेर - 906
    3. भीलवाड़ा - 905
  - **न्यूनतम**
    1. धौलपुर - 851
    2. गंगानगर - 852
    3. दौसा - 857

Springboard ACADEMY

NOTE :-
- राजस्थान के सभी जिलों में लिंगानुपात 1000 से कम है।
- राजस्थान का औसत लिंगानुपात (928) भारत के औसत लिंगानुपात (943) से कम है।
- राजस्थान में सामान्य लिंगानुपात में औसत लिंगानुपात से कम वाले जिले = 15
- राजस्थान में शिशु लिंगानुपात से औसत शिशु लिंगानुपात से कम वाले जिले = 12

न्यूनतम और अधिकतम लिंगानुपात के पीछे कारण

सर्वाधिक
- प्रति व्यक्ति कम आय।
- तकनीकी ज्ञान एवं सुविधा कम होना।
- कम साक्षरता दर
- संयुक्त परिवार
- दहेज प्रथा प्रचलित नहीं

न्यूनतम
- प्रति व्यक्ति अधिक आय
- तकनीकी सुविधा एवं जानकारी अधिक होना।
- उच्च साक्षरता दर
- एकल परिवार
- दहेज प्रथा का प्रचलन

5. **साक्षरता**- "6 वर्ष से अधिक आयु का व्यक्ति जो किसी भी भाषा को पढ़ने या लिखने में सक्षम हो उसे '<u>साक्षर</u>' कहा जाता है।"

2011 में साक्षरता दर – 66.1 प्रतिशत

2001 में साक्षरता दर = 60.41 %

सर्वाधिक
- कोटा – 76.6 %
- जयपुर – 75.5 %
- झुंझुनुं – 74.1 %
- सीकर – 71.9 %

न्यूनतम
- जालौर – 54.9 %
- सिरोही – 55.3 %
- प्रतापगढ़ – 56.0 %
- बांसवाड़ा – 56.3 %

Springboard ACADEMY

राजस्थान में पुरुष साक्षरता दर= 79.2%

सर्वाधिक

1. झुन्झुनूं = 86.9%
2. कोटा = 86.3%
3. जयपुर = 86.1%
4. सीकर = 85.1%

न्यूनतम

1. प्रतापगढ़ = 69.5%
2. बांसवाड़ा = 69.5%
3. सिरोही = 70.0%
4. जालौर = 70.7%

राजस्थान में महिला साक्षरता दर= 52.1%

सर्वाधिक

1. कोटा 65.9%
2. जयपुर 64.0%
3. झुंझुनूं 61.0%
4. गंगानगर 59.7%

न्यूनतम

1. जालौर 38.5%
2. जैसलमेर 39.7%
3. सिरोही 39.7%
4. बाड़मेर 40.6%

ग्रामीण एवं शहरी साक्षरता

ग्रामीण 61.4 प्रतिशत

- पुरुष 76.2%
- महिला 45.8%

शहरी 79.7 प्रतिशत

- पुरुष 87.9%
- महिला 70.7%

Springboard ACADEMY

	सर्वाधिक	न्यूनतम
ग्रामीण साक्षरता	झुंझुनूं	सिरोही
ग्रामीण पुरुष साक्षरता	झुंझुनूं	सिरोही
ग्रामीण महिला साक्षरता	झुंझुनूं	सिरोही

	सर्वाधिक	न्यूनतम
शहरी साक्षरता	उदयपुर	नागौर
शहरी पुरुष साक्षरता	उदयपुर	धौलपुर
शहरी महिला साक्षरता	उदयपुर	जालौर

- बाड़मेर और चुरु में साक्षरता दर में कमी आई है, शेष सभी ने साक्षरता दर में वृद्धि हुई है।
- देश में पुरुष और महिला साक्षरता दर के बीच का अन्तर सर्वाधिक है।
- राजस्थान में औसत साक्षरता (66.1%) से कम साक्षरता वाले जिले = 19

6. **ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या-**

ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या

- ग्रामीण 5.15 करोड़
  - सर्वाधिक
    1. जयपुर
    2. अलवर
    3. नागौर
    4. उदयपुर
  - न्यूनतम
    1. जैसलमेर
    2. कोटा
    3. प्रतापगढ़
    4. सिरोही
- शहरी 1.70 करोड़
  - सर्वाधिक
    1. जयपुर
    2. जोधपुर
    3. कोटा
    4. अजमेर
  - न्यूनतम
    1. प्रतापगढ़
    2. डूंगरपुर
    3. जैसलमेर
    4. बांसवाड़ा

Springboard ACADEMY

ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या

- ग्रामीण 75.1 प्रतिशत
  - सर्वाधिक प्रतिशत (डूंगरपुर)
  - न्यूनतम प्रतिशत (कोटा)
- शहरी २४.९ प्रतिशत
  - सर्वाधिक प्रतिशत (कोटा)
  - न्यूनतम प्रतिशत (डूंगरपुर)

राजस्थान के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति–

अनुसूचित जनजाति (13.5%)
(कुल जनसंख्या = (92.38 लाख)

ST लिंगानुपात 948

सर्वाधिक जनसंख्या
1. उदयपुर
2. बांसवाड़ा
3. डूंगरपुर

न्यूनतम जनसंख्या
1. बीकानेर
2. नागौर
3. चुरू

सर्वाधिक प्रतिशत
1. बांसवाड़ा
2. डूंगरपुर
3. प्रतापगढ़

न्यूनतम प्रतिशत
1. नागौर
2. बीकानेर
3. चुरू

- ST २४% से अधिक = 5 जिलों में (बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, सिरोही, उदयपुर)
- ST 50% या 60% से अधिक = 3 जिले (बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़)

Springboard Academy

अनुसूचित जाति (17.8%)

(कुल जनसंख्या = (१२२.२१ %)

SC लिंगानुपात ९२३

सर्वाधिक जनसंख्या
1. जयपुर
2. गंगानगर
3. नागौर

न्यूनतम जनसंख्या
1. डूँगरपुर
2. प्रतापगढ़
3. बांसवाड़ा

सर्वाधिक प्रतिशत
1. गंगानगर
2. हनुमानगढ़
3. करौली

न्यूनतम प्रतिशत
1. डूँगरपुर
2. बांसवाड़ा
3. उदयपुर

- SC, २५% से अधिक = २ जिले (श्री गंगानगर, हनुमानगढ़)
- २०% से अधिक = १२ जिले

8. राजस्थान में विभिन्न धर्मों की जनसंख्या–

धर्म	प्रतिशत	सर्वाधिक जनसंख्या	सर्वाधिक प्रतिशत
हिन्दु	88.49	जयपुर	दौसा
मुस्लिम	9.07	जयपुर	जैसलमेर
सिक्ख	1.27	श्री गंगानगर	श्री गंगानगर
जैन	0.91	जयपुर	उदयपुर
ईसाई	0.14	बांसवाड़ा	बांसवाड़ा
बौद्ध	0.02	अलवर	अलवर

NOTE-
- राजस्थान राज्य की जनसंख्या नीति - २० जनवरी, २०००
- राष्ट्रीय जनसंख्या नीति - 15 फरवरी, २०००

Springboard ACADEMY

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति के उद्देश्य

- **तात्कालिक** → गर्भ निरोधक एवं स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध करवाना।
- **मध्यकालिक** → २०१० तक TFR (कुल प्रजनन दर) को २.१ तक लाना।
- **दीर्घकालिक** → २०४५ तक स्थिर जनसंख्या के लक्ष्य को प्राप्त करना।

Springboard ACADEMY

पर्यटन- परिपथ / सर्किट एवं स्थल

- परिचय
- पर्यटन आगमन
- पर्यटन परिपथ
- पर्यटन स्थल
- पर्यटन संस्थान
- पर्यटन नीति
- पर्यटन योजना

1. परिचय-

- पर्यटन को उद्योग का दर्जा मोहम्मद यूनुस समिति की सिफारिश पर 4 मार्च 1989 को दिया गया।
- राजस्थान में कुल पर्यटन सम्भाग :- 4
  [जोधपुर, उदयपुर, अजमेर, कोटा]

RAJASTHAN
The Incredible State of India !

पर्यटन विभाग का

- प्रतीकात्मक पशु → ऊँट
- स्लोगन → 'पधारो म्हारे देस'
- टैग लाइन → 'Rajasthan' The Incredible State of India.

2. पर्यटन आगमन

- कुल पर्यटन आगमन = 2022-23 → 186.22 लाख
  - घरेलू पर्यटक (183.24 लाख)
  - विदेशी पर्यटक (3.08 लाख)
- राजस्थान में कुल पर्यटन आगमन = 2023-24 → 1807.52 लाख
  - घरेलू पर्यटक (1,790.52 लाख) — वृद्धि → 82.10 %
  - विदेशी पर्यटक (17 लाख) — वृद्धि → 451.35 %

Springboard ACADEMY

राजस्थान में पर्यटन आगमन का समय-

- सर्वाधिक
  - स्वदेशी — Oct.- dec.
  - विदेशी — Oct.- dec.
- न्यूनतम
  - स्वदेशी — Apr.- June
  - विदेशी — Apr.- June

पर्यटन आगमन स्थल-

- स्वदेशी
  - अजमेर
  - पुष्कर
  - माउंट आबू
- विदेशी
  - जयपुर
  - उदयपुर
  - जोधपुर

3. पर्यटन परिपथ

1.) पर्यटन सर्किट = 10	4.) वाईल्ड लाइफ सर्किट = 7
2.) पुरातात्विक सर्किट = 7	5.) ट्रायबल सर्किट = 4
3.) इको एडवेंचर सर्किट = 10	6.) आध्यात्मिक सर्किट = 4

(i) पर्यटन सर्किट-

- शेखावाटी सर्किट → झुन्झुनूं, चुरू, सीकर
- अलवर सर्किट → सिलीसेढ़ एवं सरिस्का
- भरतपुर सर्किट → भरतपुर, डीग, धौलपुर
- रणथम्भौर सर्किट → स० माधोपुर, टोंक

Springboard ACADEMY

- हाड़ौती सर्किट → कोटा, बूंदी, झालावाड़
- ढूंढाड़ सर्किट → जयपुर- आमेर- रामगढ़
  दौसा - आभानेरी
- मरू त्रिकोण सर्किट → जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर
- मेरवाड़ा सर्किट → अजमेर - पुष्कर, नागौर - मेड़ता
- मेवाड़ सर्किट → उदयपुर - चित्तौड़
  कुम्भलगढ़ - नाथद्वारा
- माउंट आबू सर्किट → सिरोही - पाली (रणकपुर) और जालौर

NOTE- राजस्थान से संबंधित अन्य पर्यटन सर्किट

- प्रस्तावित ↓ गोडवाड़ सर्किट ↓ *पाली - जालौर - बाड़मेर - सिरोही
- स्वर्णिम त्रिकोण ↓ जयपुर-दिल्ली- आगरा

२. पुरातात्विक सर्किट- (7)

1. बीकानेर पुरातात्विक सर्किट
2. जोधपुर पुरातात्विक सर्किट
3. अजमेर पुरातात्विक सर्किट
4. जयपुर पुरातात्विक सर्किट
5. भरतपुर पुरातात्विक सर्किट
6. उदयपुर पुरातात्विक सर्किट
7. कोटा पुरातात्विक सर्किट

Springboard Academy

3. इको एडवेंचर सर्किट–

शामिल जिले– 10

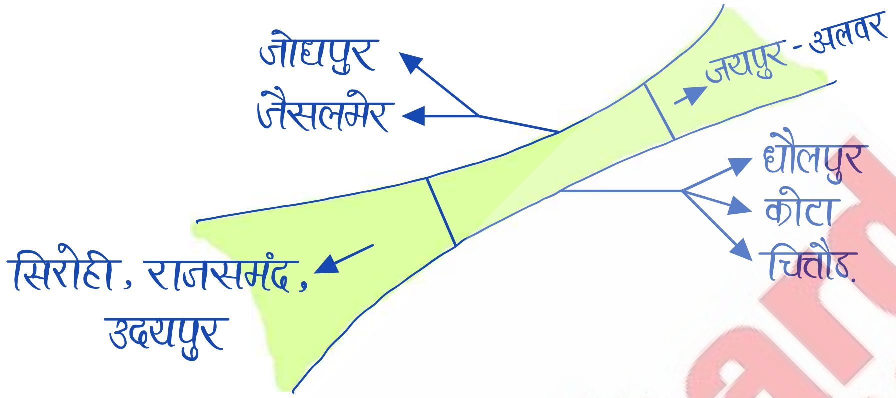

4. वाइल्ड लाइफ सर्किट-

शामिल जिले = 7

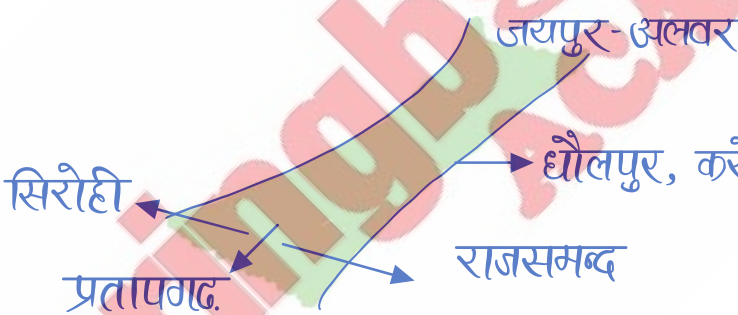

5. ट्राइबल सर्किट-

शामिल जिले = 4
- डूंगरपुर
- बांसवाड़ा
- प्रतापगढ़
- उदयपुर

6. आध्यात्मिक सर्किट–

- बुद्धा सर्किट → 2
- बालाजी सर्किट → 4
- तीर्थ सर्किट → 4
- कृष्णा सर्किट → 3

Springboard ACADEMY

* बुद्धा सर्किट-

- जयपुर - बैराठ
- झालावाड़ - कोल्वी गुफा

* बालाजी सर्किट-

- चुरू = सालासर
- जयपुर ग्रामीण = वीर हनुमान जी - सामोद
- दौसा = मेहन्दीपुर बालाजी
- अलवर = पांडूपोल (सरिस्का)

* तीर्थ सर्किट-

- अजमेर
- पुष्कर
- नाथद्वारा (राजसमंद)
- महावीर जी (करौली)

* कृष्णा सर्किट-

स्वदेश दर्शन योजना (2014-15) के तहत कृष्णा सर्किट में शामिल-

- राज्य → 5
  - राजस्थान
  - हरियाणा
  - U.P
  - गुजरात
  - ओडिशा
- स्थल → 12

NOTE- 3 sites in Rajasthan

1. सीकर → खाटू श्याम जी
2. राजसमंद → श्री नाथ जी
3. जयपुर → गोविन्द देव जी, गलता जी, कनक वृन्दावन

Springboard ACADEMY

4. पर्यटन स्थल

- **ऐतिहासिक स्थल**
  - सभ्यता स्थल
  - युद्ध भूमि
- **सांस्कृतिक स्थल**
  - धार्मिक स्थल
  - पर्यटन महोत्सव एवं मेले
  - प्रमुख दुर्ग एवं महल
  - पर्यटन महोत्सव
- **भौगोलिक स्थल**
  - हिल स्टेशन
  - नदियाँ – बाँध
  - झीलें
  - राष्ट्रीय पार्क व अभयारण्य

★ प्रमुख पर्यटन महोत्सव –

जनवरी	
• ऊँट महोत्सव	→ बीकानेर
• जयपुर लिट्रेचर फेस्टिवल	→ डिग्गी पैलेस (जयपुर)
फरवरी	
• बेणेश्वर मेला	→ डूँगरपुर
• मरु महोत्सव	→ जैसलमेर
• उदयपुर वर्ल्ड म्यूजियम फेस्टिवल	→ उदयपुर
मार्च	
• ब्रज महोत्सव	→ भरतपुर
• धुलण्डी महोत्सव	→ होली के अगले दिन
• राजस्थान महोत्सव	→ 27 मार्च से 30 मार्च
अप्रैल	
• गणगौर उत्सव	→ जयपुर का प्रसिद्ध
• मेवाड़ महोत्सव	→ उदयपुर
मई	
• ग्रीष्म महोत्सव	→ माउण्ट आबू

Springboard Academy

उत्सव	स्थान
अगस्त	
तीज उत्सव	→ जयपुर (श्रावण शुक्ल तृतीया)
कजली तीज	→ बूँदी (भाद्रपद कृष्ण तृतीया)
अक्टूबर	
राजस्थान कबीर यात्रा	→ बीकानेर
आभानेरी उत्सव	→ दौसा
मारवाड़ उत्सव (मांड उत्सव)	→ जोधपुर
अक्टूबर-नवम्बर	
दशहरा उत्सव	→ कोटा
पुष्कर उत्सव	→ अजमेर
कोलायत मेला	→ बीकानेर
मत्स्य महोत्सव	→ अलवर
चन्द्रभागा महोत्सव	→ झालावाड़
बूँदी उत्सव	→ बूँदी
दिसम्बर	
कुम्भलगढ़ उत्सव	→ राजसमंद (1-3 दिसम्बर)
रणकपुर उत्सव	→ पाली (२१-२२ दिसम्बर)
शीतकालीन उत्सव	→ माउंट आबू (२९-30 dec.)

Springboard ACADEMY

5. पर्यटन संस्थान

* **पर्यटन विभाग- 1956**

↳ पर्यटन विभाग द्वारा संचालित संस्थान-

- पर्यटन प्रबंधन संस्थान
  - जयपुर
  - जोधपुर
  - उदयपुर
- फूड क्राफ्ट संस्थान
  - अजमेर
  - सुमेरपुर (पाली)

NOTE- पर्यटन विभाग के स्वागत / सूचना केन्द्र -

राज्य में → ५२

राज्य के बाहर (5) → 1. दिल्ली 2. मुम्बई 3. चेन्नई 4. कोलकाता 5. अहमदाबाद

- पर्यटन विभाग के अधीन संचालित संस्थान - 4

1. राजस्थान राज्य होटल निगम - (RSHC)

स्थापना- 7 जून 1965, जयपुर

2. RTDC - (Rajasthan tourism Development Corporation)

- स्थापना- 1 अप्रैल 1979 (जयपुर)
- उद्देश्य- पर्यटकों को आवास, भोजन एवं यातायात सुविधाएँ प्रदान करता है।

3. RITTMAN - (Rajasthan Institute of tourism & Travel Management)

- राजस्थान पर्यटन एवं परिवहन संस्थान निगम

स्थापना- २९ अप्रैल, १९९६

4. राज्य मेला प्राधिकरण-

- देवस्थान विभाग के अधीन २०११ में गठन।
- दिसम्बर २०१९ तक ५२ मेले पंजीकृत है।

NOTE - • राष्ट्रीय पर्यटन दिवस - २५ जनवरी
• विश्व पर्यटन दिवस - २७ सितम्बर

Springboard ACADEMY

6. पर्यटन नीतियाँ

- पर्यटन नीति
  - वर्ष 2001
  - वर्ष 2007
  - वर्ष 2015
  - वर्ष 9 Sep.2020
- इको ट्यूरिज्म नीति या पारिस्थितिकी नीति
  - 1st → 4 feb. 2010
  - 2nd → 15 July, 2021
- होटल नीति
  - वर्ष 2006

→ **पर्यटन संबंधी अन्य नीतियाँ-**

1. राजस्थान फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति 2022 :-

- लागू → 18 अप्रैल, 2022
- फिल्म डेस्टिनेशन / शूटिंग को बढ़ावा देने हेतु
- कुल उत्पादन लागत का 15% अनुदान या अधिकतम 2 करोड़ ₹

7. पर्यटन संबंधी योजनाएँ

(i) **पेइंग गेस्ट योजना-**

- शुरुआत - 27 सितम्बर, 1991
- 2012 में इसे सम्पूर्ण राज्य में लागू कर दिया।

(ii) **हेरिटेज होटल योजना-**

- 1991 में भारत सरकार द्वारा हेरिटेज होटल की नवीन श्रेणी को मान्यता दी गई।

Springboard ACADEMY

→ हेरिटेज के लिए आवश्यक शर्तें-

(i) 50 वर्ष से पुरानी ईमारतों जैसे- किलों, महलों, हवेलियों एवं दुर्गों को बनाया जाता है।

(ii) हेरिटेज होटलों को सेवा एवं सुविधाओं के आधार पर तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है -

1. हेरिटेज
2. हेरिटेज क्लासिक
3. हेरिटेज ग्रेंड

NOTE :- राजस्थान में "अजीत भवन, जोधपुर" को प्रथम हेरिटेज होटल बनाया गया।

(iii) मेवाड़ काम्पलैक्स योजना-

महाराणा प्रताप की 400 वीं पुण्यतिथि (1997) पर उनके जीवन से संबंधी स्थानों (गोगुन्दा, चावण्ड, दिवेर, हल्दीघाटी) का पर्यटन की दृष्टि से विकास करना।

(iv) वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना-

→ शुरुआत - 2013 (देवस्थान विभाग द्वारा)

(v) हृदय योजना-

(HRIDAY = Heritage city development & Augmentation Yojana)

→ शुरुआत - 2015

→ उद्देश्य- देश के राष्ट्रीय विरासत स्थलों के विकास एवं संवर्द्धन के लिए।

इस योजना में राजस्थान के अजमेर को शामिल किया गया है।

Springboard ACADEMY

(vi) प्रसाद योजना-

(PRASHAD = Pilgrimage Rejuvenation & Heritage Spiritual Augmentation Drive)

- शुरुआत - जनवरी 2015
- पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा।
- उद्देश्य - तीर्थ स्थलों, आध्यात्मिक एवं विरासत स्थलों का परिवर्द्धन करना।
- इसके तहत राजस्थान के अजमेर-पुष्कर का विकास किया जायेगा।

(vii) पेइंग गेस्ट हाउस योजना-

- शुरुआत- 21 अक्टूबर 2021
- पेइंग गेस्ट हाउस के लिए आवश्यक शर्तें-
  - (i) न्यूनतम 6 व अधिकतम 20 कमरों की अनुमति।
  - (ii) होम स्टे आवास क्षेत्र में 23 से अधिक कमरों की अनुमति नहीं।
  - (iii) पेइंग गेस्ट हाउस का क्षेत्र = 167 वर्ग कि.मी.
  - (iv) पेइंग गेस्ट हाउस के सामने न्यूनतम 30 फीट रोड।
  - (v) एक से अधिक मालिकों/ स्वामित्व वाले फ्लेट को शामिल नहीं किया जायेगा।
  - (vi) fire NOC व Food Licence अनिवार्य।

(viii) गेस्ट हाउस योजना (होम स्टे)-

- शुरुआत- 16 अप्रैल, 2021

Springboard ACADEMY

(ix) राजस्थान ग्रामीण पर्यटन योजना, २०२२ :-

- ग्रामीण क्षेत्रों मे पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु।
- 30 नवम्बर, २०२२ को लागू।
- २5 लाख ₹ तक का ऋण 9% ब्याज सब्सिडी
- न्यूनतम ₹ 1 करोड़ निवेश करने वाली ग्रामीण पर्यटन इकाईयों को 10 वर्ष SGST का 100% पुनर्भरण।

अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु

पर्यटन संबंधित प्रमुख केन्द्र

- टूरिज्म कन्वेशन सेन्टर, जोधपुर (राजस्थान का प्रथम)
- इंस्टीट्यूट ऑफ हेरिटेज कन्जर्वेशन, (विरासत संरक्षण संस्थान), जयपुर
- CETT (सेन्टर ऑफ एक्सीलेंस फॉर टूरिज्म ट्रेनिंग) - 2016 उदयपुर
  - सहयोग- सिंगापुर

- ★ राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पर्यटन का लगभग 5.6 प्रतिशत योगदान है। (बजट २०२४-२5 के अनुसार)
- ★ बजट २०२०-२१ में 'पर्यटन विकास कोष' के लिए 500 करोड़ की घोषणा की। जिसे बजट २०२३-२४ में बढ़ाकर 1500 करोड़ कर दिया।
- ★ ढोला मारु टूरिज्म काम्पलैक्स – जैसलमेर में स्थापित किया जायेगा।
- ★ बेस्ट ट्यूरिज्म वीलेज, २०२४ - देवमाली (ब्यावर)

Springboard ACADEMY

यूनेस्को – भू-पार्क / Geo-Park, विश्व विरासत स्थल / Geo heritage site

- ✔ यूनेस्को
- ✔ भू-पार्क एवं भू-धरोहर स्थल संकल्पना
- ✔ राजस्थान में सम्भावनाएँ
- ✔ निष्कर्ष

A. यूनेस्को –

(United Nations Educational, Scientific Cultural Organization)

(संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन)

- स्थापना - 16 Nov. 1945 (लन्दन, ब्रिटेन)
- मुख्यालय - पेरिस फ्रांस
- भारत यूनेस्को का सदस्य "1946" में बना।

B. भू-पार्क एवं भू-धरोहर स्थल संकल्पना –

↳ यूनेस्को की जियोपार्क एवं जियो हेरिटेज साईट संकल्पना निम्नलिखित है-

यूनेस्को

- ↓ ग्लोबल भू-पार्क
- ↓ भू-धरोहर स्थल

Springboard ACADEMY

(a) ग्लोबल भू- पार्क- (Geo Park)

➜ जियो पार्क क्या है?

- यूनेस्को द्वारा "भू-पार्क" अवधारणा २००१ में दी गई।

- एकल एकीकृत भौगोलिक क्षेत्र है, जहाँ अन्तर्राष्ट्रीय भू- वैज्ञानिक महत्व के स्थलों एवं परिदृश्यों का सुरक्षा, शिक्षा एवं सतत् विकास की समग्र अवधारणा के साथ यूनेस्को द्वारा प्रबन्धन किया जाता है।

- Bottom to up दृष्टिकोण के तहत इन स्थलों के "सतत् विकास एवं संरक्षण" में स्थानीय समुदायों (भू-मालिकों, समुदायिक समूहों एवं पर्यटन सेवा प्रदाताओं) को शामिल किया जाता है।

वर्तमान में जियो पार्क-

- वर्तमान तक यूनेस्को द्वारा 48 देशों के २१3 क्षेत्रों को 'ग्लोबल जियो पार्क' का दर्जा दिया गया है।

➜ वर्तमान में भारत में प्रस्तावित प्रथम जियो पार्क 'लम्हेटा घाट' जो मध्यप्रदेश में स्थापित किया जायेगा यह स्थल डायनासोर के जीवाश्म एवं प्राचीन चट्टानों के लिए प्रसिद्ध है।

क्या जियो पार्क पद स्थायी है?

➜ यूनेस्को द्वारा किसी स्थल को 'ग्लोबल जियो-पार्क' का दर्जा 4 साल के लिए दिया जाता है।

➜ जियो पार्क के क्रियाकलाप व गुणवत्ता का 4 साल के बाद पुनर्मुल्यांकन किया जाता है।

➜ यूनेस्को ग्लोबल जियो पार्क की गुणवत्ता का आंकलन करने के लिए २ मूल्यांकनकर्त्ताओं द्वारा एक फील्ड मिशन चलाया जाता है।

➜ इस मिशन के बाद मूल्यांकनकर्ता ग्लोबल जियोपार्क पर एक 'प्रगति रिपोर्ट' तैयार करता है, जिसके आधार पर कार्ड जारी करता है, जिसमें –

हरा कार्ड	पीला कार्ड	लाल कार्ड
(मानदण्डों को पूरा करने पर पुनः 4 साल के लिए जियो पार्क सूची में शामिल)	(मानदण्डों को पूरा नहीं करता है तो उचित कदम उठाने के लिए सूचित किया जायेगा)	पीले कार्ड के बाद यदि २ वर्ष में मानदण्डों को पूरा नहीं करता तो, वह स्थल 'जियो-पार्क' का दर्जा खो देगा।

- यूनेस्को जियो पार्क की चार मुलभूत विशेषताएँ है–

i.) वैश्विक स्तर का भू-वैज्ञानिक विरासत स्थल- किसी क्षेत्र को भू-पार्क बनाने के लिए आवश्यक है कि वह स्थल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भू-वैज्ञानिक महत्व का स्थल हो।

ii) प्रबन्धन- जियो पार्क प्रबन्धन का कार्य स्थानीय वैधानिक संगठन के द्वारा किया जायेगा।

iii) दृश्यता- जियो पर्यटन के द्वारा सतत पोषणीय स्थानीय आर्थिक विकास को बढ़ाना।

iv) नेटवर्क- प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्थलों की सूचनाओं का स्थानीय स्तर के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर आदान प्रदान करना।

Springboard Academy

6. जियो हेरिटेज साइट–

- यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल संकल्पना को 1972 में अपनाया गया।

- इस संकल्पना के तहत यूनेस्को प्राकृतिक, सांस्कृतिक स्थल एवं अमूर्त कलाओं के संरक्षण को बढ़ावा देता है।

- वर्तमान में भारत के 40 स्थल यूनेस्को "भू- विरासत स्थल" में शामिल है।

  जिसमें राजस्थान के शामिल–

सांस्कृतिक धरोहर	प्राकृतिक धरोहर	अमूर्त कला
जन्तर- मन्तर (2010)	केवलादेव - भरतपुर (1985)	कालबेलिया नृत्य (2010)

- 6 दुर्ग (2013) → 1. आमेर (जयपुर)
  2. गागरोन (झालावाड़)
  3. सोनार (जैसलमेर)
  4. रणथम्भौर (स. माधोपुर)
  5. चित्तौड़गढ़
  6. कुंभलगढ़ (राजसमंद)

- जयपुर परकोटा - 2019

राजस्थान में सम्भावनाएँ-

- भारतीय भू- वैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग / Geological Survey of India (GSI- 1851, कोलकाता) द्वारा राजस्थान की 12 स्थलों को जियो हेरिटेज साइट घोषित किया गया है।

Springboard Academy

1. जावर	उदयपुर
2. स्ट्रोमेटोलाईट (नील हरित शैवाल द्वारा निर्मित चट्टानें)	सामर कोटडा (उदयपुर)
3. स्ट्रोमेटोलाईट	भोजुण्डा (चित्तौड़)
4. ग्रेट बाउण्ड्री फॉल्ट	सातूर (बूंदी)
5. रामगढ़ उल्कापिण्ड क्रेटर	रामगढ़ (बारां)
6. जोधपुर मालानी ग्रुप आग्नेय चट्टानें	जोधपुर
7. वेल्डेड टफ	जोधपुर
8. सेंदड़ा ग्रेनाईट	पाली
9. बर कांग्लोमैरेट (अवसादी चट्टानें)	पाली
10. आकल वुड फॉसिल पार्क (जुरासिक काल की लकड़ी के अवशेष)	जैसलमेर
11. गोसाण राजपुरा दरिबा	राजसमंद
12. नेफेलाइन साइनाइट	किशनगढ़

Springboard ACADEMY

निष्कर्ष-

यूनेस्को एवं स्थानीय समुदाय के सहयोग से प्राकृतिक सांस्कृतिक स्थलों एवं अमूर्त कलाओं को संरक्षण देना एवं आर्थिक विकास व पर्यटन की सम्भावनाओं को बढ़ाना।

INTACH-

(Indian National trust for Art & Cultural Heritage)

- स्थापना- 27 जनवरी, 1984 (नई दिल्ली)
- उद्देश्य- विरासत संरक्षण एवं जागरूकता को बढ़ावा देना।